



वी. पी. कोइराला कृत

मोदिआइन

मैथिली रुपान्तरण
बृषेश चन्द्र लाल

प्रकाशक
सुदामा प्रकाशन
जनकपुरधाम, नेपाल

ढुदलआइन

डुरकलशलक : सुदलडल डुरकलशन, ऑनकडुरधलड ।

आवरण : डृषेश ऑनुर ललल

डूलुड : नै.रु. २ॡ टलकल

डुल.रु. २० टलकल

डुदुरण :

दुई शब्द

एकाएक वृषेशजी मोदिआइनको मैथिली रुपान्तरणको पाण्डुलिपि मेरो हातमा थमाएर प्रकाशकीय अनुमति माग्नुभयो । एक छिनका लागि अर्चाम्भत भएको थिएँ म, तर त्यो क्षण अत्यन्त खुसीको थियो । छात्रजीवनदेखि नै प्रजातान्त्रिक लडाइँ तथा समाजवादी आन्दोलनमा अत्यन्त सक्रिय भूमिका खेल्दै आउनु भएका वृषेशजी राजनीति जस्तै साहित्यमा पनि रुचि राख्नु हुँदो रहेछ । निश्चय नै यो आह्लादित गर्ने विषय हो ।

विभिन्न भाषामा मोदिआइनको अनुवाद भइरहेको बेलामा नेपालकै दोस्रो भाषा मैथिलीमा अनुदित मोदिआइनको प्रकाशन हुनु निश्चय नै साहित्यिक जगतका लागि प्रसन्नताको सन्दर्भ हुनेछ । यसले मैथिलीभाषी समाजलाई आदरणीय विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको चर्चित कृतिको रसास्वादन गर्ने अवसर प्रदान गर्नेछ भन्ने मलाई विश्वास छ । यसले निश्चय नै साहित्यप्रेमीहरूमा नयाँ उत्साह र ऊर्जा पनि प्रदान गर्नेछ ।

मोदिआइन लघु कलेवरमा आवद्ध रहे पनि यस भित्र सान्दाजुको दर्शनसार प्रकट भएको मलाई लाग्छ । गीताको कर्मयोगको उपदेशलाई मानवीय सन्दर्भमा अनुभव गरेर आध्यात्मिकतालाई अङ्गीकार गरे पनि कुरुक्षेत्रका भीषण मानव-संहारलाई मानवताको निम्ति घातक कर्म भएको ठहर गरेर सिङ्गै महाभारत तथा प्रेम र जीवनको सारतत्त्वलाई यो सानो आकारको उपन्यासमा सान्दाजुले अटाउनुभएको छ । यद्यपि पक्ष र विपक्षमा समीक्षाहरू प्रकाशित भइरहेकै छन्, मलाई भने सान्दाजुको राजनीतिक व्यक्तित्व यस उपन्यासमा मानवतावादको नाउँमा रुपान्तरण भएको जस्तो लाग्छ ।

सान्दाजुका साहित्यिक र राजनीतिक दुवै व्यक्तित्व उत्तिकै अग्ला र आरोहणयोग्य छन् । वहाँको साहित्यमा राजनीतिक प्रभाव छैन भनिन्छ तर यो कुरा साँचो जस्तो लाग्दैन । वहाँ जस्तो राजनीतिक संस्कार भएको व्यक्तित्वमा यो भन्नै असम्भव कुरा हो । तर एउटा सत्य के हो भने वहाँले भने जस्तै राजनीतिको प्रत्यक्ष छाया साहित्यमा परेको छैन । अन्तः प्रेरणाबाट प्रभावित भई स्वतन्त्र लेखनलाई बढी मन पराउने भएका कारण वहाँका सबै विधाका रचना नयाँ नौला र सारगर्भित बनेका छन् । मोदिआइन पनि यसै किताको अब्बल रचना हो ।

यति गम्भीर भावको कृतिको अनुवाद लर्तरो कुरा होइन । वृषेशजीको यस प्रयत्नका लागि धन्यवाद दिँदै यसको गहिराइमा पुगेर रस लिने काम विज्ञ पाठकहरूबाट हुने नै छ भन्ने विश्वास लिएको छु । सान्दाजुको प्रत्येक कृतिको मैथिलीमा अनुवाद होस् भन्ने चाहन्छु । **धन्यवाद !**

२०६१/१/११



कृतज्ञता

बहुत पहिने हमरासभक श्रद्धेय नेता श्री विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाजीक कृति **मोदिआइन** पढ़ने रही । हमर आदरणीय नेताक रचना भेलाक कारणेँ आ' ताहूमे प्रजातान्त्रिक अधिकारहेतु निरन्तर संघर्षरत जीवनक अवर्णनीय कठीन यातनाक क्षण बन्दीगृहसँ लिखल हएवाक कारणेँ हुनकर ई कृति हमरा आकृष्ट कएने छल । जखन अद्योपान्त पढ़ि लेलहुँ तऽ ई हमरा वेश आकृष्ट कऽ लेलक आ' सदाक हेतु अपन छाप हमरापर लगा देलक । गीतापर वी.पी.क दृष्टिकोण, मानवत्व आ' देवत्वक भेद हमरा अद्भूत लागल । तत्क्षण हमरामे एकर अनुवादक लालसा जागृत भेल । हमरा लागल जे वास्तवमे लोककेँ नीक लोक बनवाक चाही ... बड़का नहि !

एहि उपन्यासमे वी.पी.क शैशवक किछु संस्मरण हएवाक वेश सम्भावना अछि । हुनक शैशवक महत्वपूर्ण अवधि मिथिलाञ्चलमे बीतल छन्हि । एहि उपन्यासमे सेहो ओ अन्तमे दड़िभङ्गासँ जयनगर घुरिकय अवैत छथि । तै “ नीक बनक चाही बड़का नहि !” अवस्से मिथिलेक प्रशिक्षण हएत जे सुन्दरीजल जेलक कठिनतम परिस्थितिमे सेहो हुनक मार्गदर्शन कएलक । हमरा लागल मिथिलाक ई महत्वपूर्ण सीख मिथिलाञ्चलक लोकक बीचमे फेरसँ सिंचित हएवाक चाही ।

आ' फेर जेना होइत अयलैक अछि, हम विसरि गेलहुँ । नीक चीज लोक विसरि जाइत अछि । मुदा हमर अग्रज द्वय पूज्य गिरीश चन्द्र लाल आ' शिवेन्द्र लाल कर्ण हमरा स्नेहपूर्वक घचघचोलन्हि, अढोलन्हि आ' एकर अनुवाद प्रारम्भ करवा देलन्हि । परम पूज्य आचार्य सोमदेव एवं आदरणीय अग्रज भाईजी(डा. राजेन्द्र प्रसाद 'विमल')क आर्शीवाद सदैव प्रेरित आ' मार्गदर्शन करैत रहत । शिवेन्द्र भैयाक शुद्धाशुद्धिमे जे योगदान अछि, से जौ नहि सम्भव होइत तऽ आनेआन चीजसभ जकाँ इहो कतय ने फेका जाइत । ... हमर विजयाक प्रोत्साहन आ' बेर-बेरक – ‘पढ़ल-लिखल आदमीसभकेँ करयबला काजसभ करु ने !’ उक्ति हमरालेल शक्तिदायक रहल । कामोद भैया, मधुकान्तजी आ' अनुज रतीशक प्रकाशनमे योगदानहेतु सदैव आभारी रहब । सभक प्रतियेँ हम कृतज्ञ छी आ' सभ दिन हमर हृदयमे ई कृतज्ञता भरल रहत । प्रणाम !

– वृषेश चन्द लाल

आमुख

मोदिआइनक डीहपरसँ

स्वनामधन्य वी.पी. कोइराला, जयप्रकाश-लोहिया-फणीश्वरनाथ रेणुयुगक राजनीतिधरातलक बेछप महासाधक रहलाह – हिन्दीयोकेँ अमूल्य योगदान केनिहार । नेपाली मैथिली कर्मक्षेत्रक त’ ओ भोरुकवे छथि ; आ’ एहि मर्मक्षेत्रक पूर्णचन्द्रोदयक मोहक प्रतीक । मैथिलीक पुण्यभूमि जनकपुर होइत दड़िभङ्गा आयल हुनक बालमोन नगरदर्शनकक्रममे एहि सिद्धभूमिक हड़ाही (हड़ाहा) पोखरिक प्रसङ्गक-स्वप्नमे बोहिआइत ई रम्यकथा; जकर सूत्र महाभारतधरि जुड़ैत अछि – उपन्यासिका ‘मोदिआइन’ नेपालीमे खूब ख्याति पओलक; संगहि दड़िभङ्गासँ जुड़ल ई प्रसङ्ग सेहो । एहन रचनाक आईधरि मैथिलीमे रुपान्तरित नहि होयब; मैथिली भाषी, खासक दड़िभङ्गा आवासीलेल त’ बूभू जेना अपने घरमे गड़ल सम्पत्तिसँ अनजान रहबाक अभाग्यसन छल । पहिलबेर ई अमूल्य कथाघट ‘मोदिआइन’ केर मैथिली रुपान्तरण प्रस्तुत कै बृषेश चन्द्र लाल प्रशंसनीय ऐतिहासिक काज कयलनि अछि ।

दड़िभङ्गामे जखन नगर- निगम बनल; हमरासँ एकर परिचितिलेले चारिगोट पाँती लिखौल गेल छल –

पग पग पोखरि, माछ मखान । सरस बोल, मुस्की मुखपान ॥

विद्या-वैभव शान्ति-प्रतीक । ललितनगर दड़िभङ्गा थिक ॥

से एतय एहि पोखरिसभक नायक छथि गंगासागररूप पैर, आ’ दिग्घीसन पेटवला, हड़ाह मुख, हिमालदिस तकैत हड़ाहा वा हड़ाही महापोखरि । एहि पोखरिलेले प्रचलित किंवन्ती आवक लोक ओहिना विसरल जा रहल अछि; जेना आइसँ अस्सीवर्ष पूर्वक ग्रामीणनगर दड़िभङ्गाक मौलिक परिवेश; आधुनिक वैश्वीकरणदिस बेतहास भागल जाइत दरभंगाक लोकक कल्पनोमे आव सम्भव नहि । कतऽ ओ एक्का- टमटम आ’ कतऽ ई टेम्पो-कार । कतऽ ओ चूड़ा-दही-लड्डू । कतऽ ई चाट-समोसा-चाउमिन । ...से परिवर्तन होयब उचिते । अपन काल-चिन्तनक स्वाभाविक आनन्दलेले एकान्तक्षणमे लोक अतीत-गाथा, वर्तमान-व्यथा आ’ भविष्यक कल्पकथारूप भाव-प्रवाहमे सैर करय चाहैत अछि – जाहिलेले नाव होइछ साहित्य । वर्तमानकेँ त’ सभ देखैत-परखैत छथि । भविष्य हारल वाचीजनाप्रिय मोनद्वारा अपने गढ़ा जाइछ । मुदा दन्तकथासँ जुड़ल ऐतिहासिक भावयात्राकेँ अङ्कित करक सौभाग्य त’ बिरलेकेँ भेटैत छनि ... आ’ सेहो कर्मठ

समदृष्टि समाजसेवी विचारक वी.पी. कोइरालासन भावप्रवण साधकक बाल्यकालक स्मृतिशेषक एहि अशेषकथाक त' चर्चै नहि हो ।

'मोदिआइन'मे वर्णित दडिभङ्गाक हडाहीक पूव-दक्खिनकातक इनारक अवशेष एखनहुँ अछि, जतयसँ शुरु होइत छल मोदिआइन आ' आवासीय भोजनालयसभक क्रमपाँती । ओइठामसँ दक्खिन अछि संग्रहालय आ' हालमे बनैत संगीततालबद्ध नचैत फुहारा । ... आगन्तुक आ' नगरवासी संग्रहालयमे इतिहास ताकताह आ' फुहारापर अपन कल्पनाक पाँख पसारताह । के पछुत आव हडाहीक ओइ अपनामे इतिहास पचौने मोहारकेँ, जेआब नालीमे भासैत सेमारक आँचरतर सडि-गलि गेल अछि !! प्रस्तुत कृतिकेँ पढ़ि, हमर कवि मोन साँभखन 'मोदिआइन'क स्मृतिशेषक तलासमे हडाही टरेसक ओही इनारलग गेल । विजुरी रहवाक प्रश्ने नहि । सुभितो अछि कम्मे । एकटा बोनभाडयुक्त मोहारलग मोदिआइनक दोकान, मलाहिनक प्रेत आ' महाभारतक इतिकथा – तीन उभरल, हजारहजार हाथसँ वी. पी. कोइरालाक सड वृषेश चन्द्र लालकेँ आशीवाद दैत !! हम मुग्ध भऽ गेलहुँ ।

अन्तमे एतवे, जे उपलब्ध भेलोसन्ताँ जे अइ पोथीरूप धरोहरसँ परिचित नहि होयताह; हमरालेखेँ हुनक जिनगी बुझू दरभङ्गा टीसनक प्लेटफर्मपर कटि गेल – अपहृत जीवित हाडक समानधर्माजकाँ !! ... ओना पोथीक कलेवर कनेक छोट, मुदा "देखनमे छोटन लगय, घाव करय गम्भीर"केँ चरितार्थ करैत । जुल्मी ब्रेनटॉनिक ! कथा जतवे सरस, विचार ततवे गम्भीर – हडाहीसँ कुरुक्षेत्रधरि ! पराविज्ञानसँ अपराज्ञानधरि !!

दरभंगा ८४६००१, भारत
दूरभाष: ०६२७२-२४२६०१

– आचार्य सोमदेव
०८-०४-२००४ ई.

मोदिआइनक देहरिसँ

'मोदिआइन' नेपाली साहित्यक कालजयी कृति थिक जाहिमे महाभारत युद्धक औचित्य आ' गीता दर्शनपर पहिल बेर एहन तात्विक आ' विचारोत्तेजक प्रश्न ठाढ़ कएल गेल अछि, जकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव-अस्मिताक लेल अपरिहार्य ओहि मानवीय मूल्यसँ छैक, जकरा पण्डितलोकनि पारम्परिक पूर्वाग्रहक धृतहुकेर पाखंडपूर्ण तुमूल घोषसँ अवदमित आ' अवमूल्यत करैत आयल अछि । विसंगत जीवन भागैत मोदिआइन महाभारत युद्धक साक्षी नारी

नाम्नी कल्पित पात्रमे स्वयंमे प्रत्यारोपित भए कथानायक समक्ष प्रस्तुत भेल अछि ।

महाभारतक प्रसंग छैक । ... हस्तिनापुर दुर्योधनक दरवार आ' इन्द्रप्रस्थ युद्धिष्ठिरक राजमहलमे अन्तःस्पर्द्धा बढ़ैत चलि जाइत छैक । छलपूर्ण युतकीडामे पाण्डवक पराजय आ' द्रौपदीक लज्जाजनक अपमान । पाण्डवक वनवासक समाप्तिपर पाण्डवद्वारा अपन राज्य घुरावयहेतु दुर्योधनकेँ पठाओल सम्बाद आ' दूतक तिरस्कार । वैमनस्यक धधकैत ज्वालाक युद्धक विभिषिकामे परिणत होएवासँ पूर्व द्वारिकासँ कृष्ण मध्यस्थताक हेतु अवैत छथि । श्री कृष्ण वृष्णि वंशक आ' सिन्धु प्रसूत राज्यक वीर नेता थिकाह, मुदा पाण्डवक सम्बन्धियो तँ छथि ! तँ पाण्डवक हितमे कपटसँ भरल निर्णय दैथ तकर सम्भावना तँ छैके । दूनू पक्षसँ युद्धक तैयारी होमए लागल । कृष्ण अर्जुन आ' दुर्योधनसँ पूछै छथिन्ह –“एक दिशि अक्षौहिणी सेना रहत, दोसर दिशि हम । कोन लेव ? ” दुर्योधन अक्षौहिणी सेना चुनैत छथि । अर्जुनक मान्यता छनिन्ह –“ यतो कृष्णस्ततो जयः । ” पाण्डव आ' कौरवक विराट सेना कुरुक्षेत्रमे युद्धक हेतु जमा होइत अछि । असंख्य शंखध्वनिक निनाद । युद्धक बीच मैदानमे ठाढ़ अर्जुन चकुआ कए देखै अछि – सगरो ओकर अपनहिं रक्त-सम्बन्धीक लस्कर छैक । ओकर मानवीय हृदय द्रवित भ' उठैत छैक ; धिक्कार क' उठैत छैक । मुँहसँ आर्तवाणी बहराइत छै –“नहि, हम अपन कुटुम्बलोकनिक हत्या अपनहिं हार्थे किन्नुहु ने करव ! हमरा राज्य नहि चाही ।”

तखने नेता कृष्ण ठाढ़ भ' जाइत छथि । ओजगुणसम्पन्न कवित्वपूर्ण भाषामे सोरह अध्याय गीता धाराप्रवाह बजैत जाइत छथि –“आत्मा अमर थिक, देह मात्र जीर्ण वस्त्र जकाँ बदलैत अछि । अर्जुन गाण्डीव उठावह, कौरवसेनाक बध करह । इहए तोहर धर्म । ... मरवह स्वर्ग पएवह, जीवह राज्यसुख भोगवह ! ... उठह अर्जुन, उठह !! ... ”

उपन्यासकार कोइरालाक दृष्टिएँ ई मानवता आ' दैवत्वक द्वन्द्व थिक । अर्जुन करुणा, सहृदयता, स्नेह, प्रेम, स्वजातीयता, कौटुम्बिकता, मैत्री, दयासन उदात्त मानवीय गुणक साकार प्रतिमा थिकाह । मुदा, हुनक ई सम्पूर्ण मानवीय गुण नेता कृष्णक गीता-भाषणक सम्मोहनमे तरहथीक रेत जकाँ उधिया जाइत अछि । हुनक प्रकृत धर्म फेका जाइत छैक आ' ओहि स्थानपर कृष्णक देवत्व आरुढ़ भ' जाइत छैक । जेना हुनकापर देवत्व सवार भ' गेल होइन्ह, ओ स्वयं स्वयं नहि रहैत छथि, श्रीकृष्ण भ' जाइत छथि आ' गाण्डीव उठा लैत छथि । हुनका संगहिं गीता सुनिहार कुरुक्षेत्रक सम्पूर्ण सैनिक उन्मादित भ' जाइत अछि । आखिर, श्रीकृष्ण नेता थिकाह ने ! भीषण युद्ध होइत छैक । कुरुक्षेत्रमे बहल सोनितक समुद्रमे गन्हाइत लाशक पहाड़ ठाढ़ भ' जाइत अछि । उपन्यासकारक प्रश्न छैनिन्ह – अर्जुनक करुणा, कुटुम्ब-प्रेम, सहज मानवीय सम्वेदनाकेँ कृष्णक युद्ध पक्षमे कराओल आत्मसमर्पण की उचित वा सार्थक सिद्ध भेल ? कथा-

नायिका मोदिआइन तै बौआके बुभुवैत छथिन्ह –“बाउ, महान नहि, वीर नहि, नीक लोक बनब !” ई ओहि पूर्व प्रधानमन्त्री वी.पी.क आत्मनिर्णय थिकेन्ह जे राजा महेन्द्रद्वारा संसद विघटनक पश्चात् सुन्दरीजलक बंदीगृहमे बंदी बनल आत्मसंघर्षमे लीन छथि – नेपालमे प्रजातन्त्रक पुनस्थापनालेल रक्तक्रान्ति चाही वा शान्तिपूर्ण सत्याग्रह ; भीषण नरसंहार वा प्रेमपूर्ण मेलमिलाप ? इतिहास साक्षी अछि निर्णय प्रीति आ’ शान्तिक, करुणा आ’ मैत्रीक भेल रहैक !

मात्र तीन दिनमे लिखल गेल एहि उपन्यासिकामे मोदिआइनक वेदनामे किछु समीक्षककेँ अस्तित्वक वेदना वा अस्तित्वादी दर्शनक भ्रूलक भेटैत छैन्ह, किछु गोटे मिथककेँ वर्तमान सन्दर्भमे रुपान्तरित आ’ व्याख्यायित देखि मुग्ध थिकाह, किछु लोक मानव-अस्मिताक गम्भीर मूल्यक पहिचानक कारणेँ विस्मित छथि, तँ किछु एकर आंचलिक परिवेशकेँ कलात्मक सज्जामे सजीव देखि सम्मोहित छथि । मुदा, हम उपन्यासकार कोइरालाक ‘मोदिआइन’क दूरारूढ कल्पना, समयकेर सेलोलाइडपर मिथककेँ राखि ओकर मर्म चिन्हबाक वैज्ञानिक चिन्तन आ’ तकरा कलात्मक सज्जा देबाक अपूर्व सामर्थ्य, परिवेशकेँ शब्द चित्रक माध्यमसँ जीवन्त बना देबाक कौशल, मानव मनक गहन परख आ’ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंकन आदि गुणसँ अभिभूत छी ।

‘मोदिआइन’ मैथिलीमे आबि जेना आओर सहज, सुन्दर, सरस आ’ मधुर भ’ गेल अछि । मूल उपन्यास हम दू बैसारमे पढ़ने रही, ई अनुवाद एकरहि साँसमे पढ़ने विना नहि रहल गेल । मैथिली भाषाक प्रकृति अनुकूल भाषाशैलीक प्रयोगक कारणेँ ई अनुवाद जकाँ नहि, मौलिक कृति जकाँ रसाप्लावित करैत अछि । एहन महान कृति सम्पूर्ण मैथिली भाषाभाषी पाठकक हेतु श्री वृषेश चन्द्र लाल हस्तामलक बना देलैन्ह अछि, तै मिथिलांचलक सम्पूर्ण पाठकक दिशिसँ हम हिनकापर लाखलाख साधुवादक वर्षा करैत छी । मूलतः राजनीतिककर्मी होइतहुँ अपन मातृभाषा, संस्कृति आ’ साहित्यकप्रति हिनक असीम अनुरागक प्रमाण स्वयं इतिहास अछि, हमर साक्षीत्वकेँ पूर्वाग्रह मानल जा सकैत अछि । हिनक चिन्तनक उँचाइ, हृदयक भावप्रवणता आ’ उपयोगमे नहि आबि सकल कलमक सामर्थ्य हम खूब नीक जकाँ जनैत छी तै माँ मैथिलीसँ प्रार्थना मोनहिँ मोन वर्षासँ करैत रहलहुँ अछि जे हिनक सम्पूर्ण क्षमता जँ मैथिली साहित्यमे प्रकट भ’ सकैत तँ मिथिला धन्य भ’ जाइत ! विश्वास अछि, माता हमर प्रार्थना सुनतीह ।

इत्यलम् ।

जनकपुरधाम, नेपाल
दूरभाष : ०४१-५२०२६२

– डा. राजेन्द्र प्रसाद ‘विमल’

बात बहुत पहिनेक थिक ; हम वच्चे छलहुँ । बाल्यकालक लगभग बातसभ लोक प्रायः बिसरिये जाइत अछि । मुदा स्मृतिमे किछु एकदम स्पष्ट अँडल बैसल रहि जाइत छैक । जेना कि कोनो दूर ठाढ़ मनुख स्पष्ट नहि देखयलोपर ओकर कद-काठी, लत्ता-कपड़ा, भाव-भङ्गिमा आ' जाहि घर-वारीमे ठाढ़ भऽ ओ अपन जन-बनिहारकेँ देखि रहल अछि, तैसभकेँ मिलाकय हमरासभ ओहि ठाढ़ व्यक्तिकेँ ठेकानि लैत छिएक जे ओ तऽ परमपरिचित फलाना छथि । तहिना किछु स्मृति धोकाएलसन देखाइत अछि जकरा ठेकानयलेल कल्पनाक मदति लेबय पड़ैत छैक ।

स्मृतिक आधारपर कोनो पहिलुका घटनाकेँ क्रमबद्ध तथा अर्थयुक्त बनाबयहेतु कल्पनाक सहयोग आवश्यक भऽ जाइत छैक से बुझना जाइछ । उदाहरणार्थ, जेना पुरातत्त्ववेत्तालोकनि कोनो खँडहरमे उपलब्ध ईंट, पाथर, भूमिक बनौट, किछु आकारमय काठक रचनासभ आ' गृहनिर्माणमे प्रयुक्त आवश्यक अन्य सामग्रीसभक आधारपर बहुत पहिने ठाढ़ कोनो राजप्रासादक वर्णन कऽ दैत छथि ।

लोकसभ पृछत – ई कथा ठीके साँचे छैक ? ... अथवा एकगोट गल्प मात्रे अछि ई ? एहि सन्दर्भे हमरा एतबा कहबाक अछि जे ई ४० वर्ष पहिने हमर बाल्यकालक भावनामय दुनियाँमे घटल एकगोट घटना थिक आ' एतेक दिनक बाद अपन स्मृतिक दूरबीनसँ आई हमरा ई जेहन देखाइत अछि तथा वर्तमानसँ संयोजनक पश्चात् जेहन एकर आकार बनि कऽ भऽ गेल छैक, हम तकरेटा ओहिना ओही रूपमे वर्णन कऽ रहल छी ।

□□

हँ, तऽ कहि रहल छलहुँ, बात बहुत पुरान थिक । हमरासभक गुमस्ता आ' घरक परम हितैषी मिसरजीकेँ अपन कोनो काजसँ दड़िभङ्गा जएबाक तैयारी करैत देखि हमहुँ जीद् करय लगलियन्हि – “ मिसरजी, हमहुँ जायब ! ”

“ अहाँ कतय जाएव, बौआ ? हमरा एकगोट काज अछि । काल्हिये तऽ हम दौड़ले फिरि जाएव ! बेकारे हरान होमए कथीले जाएव ? ”

हम अपन जीद नहि छोडलहुँ, कहलियन्हि – “ हम दड़िभङ्गा कहियो नहि गेल छी । ”

“ ओहिठाम देखय लायकक किछुओ छैक, बौआ ? ”

“ कहाँदोन दड़िभङ्गा महाराजक दरवार छन्हि, हथिसार छन्हि, बड़का अस्तबल छन्हि, कचहरी छन्हि आ’ बड़का-बड़का घरसभ छैक ... नहि मिसरजी, हमहुँ जाएव । ”

हमर जीद जीतल । हमहुँ एकगोट छोटका मोटरी लऽ कऽ मिसरजीक संगे दड़िभङ्गा अयलहुँ । तहियाक दड़िभङ्गा स्टेशन बुभू तऽ कङ्गाले जकाँ छल । निच्चामे पातर अलकतरा विछायल बड़का प्लेटफारम आ’ भितरसँ सटल एकगोट नाम टेबुलपर बाहरक कोलाहलसँ एकदम निर्द्वन्द्व भऽ मुड़ी गौतने स्टुल-स्टुलपर बैसि अपन काज करैत स्टेशनक कर्मचारीसभ । दोसरकात जिल्लाक बड़का-बड़का पदाधिकारीसभ (जे तखने स्टेशनपर आयल रहैत छलाह ।) विश्राम करैत छलाह जतए कोरमे लाल मगजी लागल बेंतक गोनरिसनक बड़का पंखा लटकल रहैत छल जकरा एकगोट करिकवा कुल्ली डोरी नेने बाहर भीतमे अडेंस लगोने औघाइत घिचैत आ’ छोड़ैत रहैत छलैक । जेना-जेना डोरी तनाइत छलैक तेना-तेना भीतर कोठरीमे पंखाक डण्ठी मचमचाइत हिलैत छलैक । भीतरक लोहाक घिरनी सेहो ओही सुरमे आव खसत तब खसत होइत खिररररर करैत नचैत रहैत छलैक ... एकटा प्लेटफारमसँ दोसरपर जाएवला बड़का पुल तऽ निःसन्देह कङ्गाले सन छल, गणितक गुणन चिन्हक आकारमे बनाओल ओकर घेरा लाल रंगमे रङ्गल रहैत छलैक । ... ओना भरिदिन कोनो दैत्य जकाँ ठाढ़ आ’ स्टेशनक सम्पूर्ण वातावरणक घोरल अस्तित्वकेँ छपने ओ पुल रेल अबिते लोकसभक अकारणक व्यग्रतासँ थरथराय लगैत छल । ... ओहिना स्टेशनोपर ... जखन गाड़ी अबैत छलैक तखन अत्यन्त चहलपहल, दौड़धूप, भागमभाग, असंख्य कण्ठक तुमुल हाहाकार आ’ ताहिपर पान-सिगरेट-वीड़ी बेचयबलासभक कण्ठफोरवा चिकड़नाईक साम्राज्य भऽ जाइत छलैक । गाड़ी स्टेशनपर पहुँचिने कतय ने कतयसँ बेहिसाब असंख्य कुल्लीसभ बरबराकय पूरा प्लेटफारमपर आ’ डिब्बा-डिब्बामे भरि जाइत छल तथा पसिंजरक

मोटासभपर हाथ धरैत बुझू ने कब्जे करैत कहैत छल – “ एक्के पैसामे बाहर ... पहुँचा देव । ”

दड़िभङ्गा स्टेशनपर पहुँचयसँ बहुत पहिनहिं पसिंजरसभ अपन-अपन मोटरी-चोटरी मिलावय लागल छल । डिब्बामे हलचल मचि गेल छलैक । ... मिसरजी सेहो उठिकय अपन मोटाकेँ देखलन्हि । सुरक्षित छलन्हि । बहुतो पसिंजर अपन-अपन समान गनय लागल – “ जम्मा कएगोट छल, अर्येँ ... ? एहिठाम तऽ सातेटा देखैत छी । ... हूँ ... ! भेटल, एकटा मोटरी ओम्हर छल ।” बृहपुरानसभ धियापुताकेँ सम्भावय लगलखिन्ह – “ हे रौ, एम्हर-ओम्हर नहि करिहे ! हेरा जएवे । ... दड़िभङ्गामे बड्ड भीड़भाड़ रहेत छैक । हमरासभकेँ पकड़ने रहिहे ... नहि छोड़िहे ! ” घोघसँ भाँपि-तोपिकय अपनाकेँ समेटने महिलासभ असयत भऽ हड़बड़ायल दृष्टियेँ चारुकात देखय लागलि छलि । ... हम तऽ पहिनहिसँ हड़बड़ायले छलहुँ, डिब्बामे चञ्चलता अबिते चटपट अपन मोटरीसहित उठि ठाढ़ भऽ तयार भऽ गेलहुँ । मिसरजी बजलाह – “ बौआ, कथिलए हड़बड़ा गेलहुँ ? ... एखन बड्ड देरी छैक । भल तऽ राजदरवार देखायल अछि । ... हे वा ऽ देखियोक ! ”

ओ दहिना खिड़कीलग आविकय दूर देखाइत ललका दरवारदिस आइगुर देखोलथि । हमहुँ व्यग्रतासँ गर्दिन उचका-उचकाकय दरवारदिस ताकय लगलहुँ । रेल वेगसँ दौड़ रहल छलैक ; सिसो, बाँस आ' आमक फूलबारी दरवारकेँ छेकि देलकैक । ... एक-दूटा कऽ छोटका-छोटका शहरिया सनक घरसभ देखाय लागल – ईटाक दिवाल मुदा उपर खर वा खपडाक एकतल्ला घरसभ । एकचारी खसाकय बनाओल काम चलाउ दलानहेतु बरमदा निकलल घरसभ सेहो देखाय लागल । मिसरजी हमरा सम्भावय लगलथि – “ बुझलियेक, ओ ललका नौलक्खा दरवार थिकैक । ... नौ लाख रुपैया लागल छैक बनावयमे ! ”

गोलगला गञ्जी पहिरने एखनतक एकदम निश्चल भऽ कऽ एकगोटे श्लोक पाठ करैत बैसल छलाह । जेना हुनका असहय भऽ गेल होइन्हि ओ चट्ट प्रतिकार करैत कहलखिन्ह – “ के कहलक जे ई नौलक्खा दरवार थिकैक ? ... ओ दरवार तऽ राजनगरमे छैक । एकरा बनावयमे डेढ़ करोड़ रुपैया लागल अछि, डेढ़ करोड़ ! ”

अपन बात समाप्त करैत ओ एकवेर डिब्बामे चारुकात सगर्व दृष्टि घुमोलथि, जेना ओ दरवार हुनक अपन निजी निवास स्थान होन्हि आ' लागत कम आँकि मिसरजी हुनक हैसियतक अपमान कएने होइथिन्ह ।

यात्रीसभक ध्यान अपनादिसि सहजे आकृष्ट पावि ओ महानुभाव अत्यन्त कुशलतापूर्वक खैनीक थूक खिड़की दने पिच्च दऽ थूकैत आगाँ बहलाह – “ महाराजाधिराज बड्ड शौखसँ एहि दरवारक निर्माण करोलथि । हिन्दुस्तानमे ओहन कारीगरसभ नहि छलैक, तँ इटलीसँ कारीगरसभ मँगाओल गेल । भीतरमे सभतरि ललका संगमरमर छाड़ल अछि, ... आ’ सेहो इटलीयेसँ मँगाकय ! ... बड़का-बड़का ऐना छैक, आदमीसँ दोब्बर कदक ऐनासभ !! ... शीशाक सभ समान बेल्जियमसँ, पर्दा आ’ टेबुल-कुर्सी तथा पलङ्गपरक कपड़ा, ओछाओन आ’ चदरिसभ फ्रान्सिसी सिल्क, मखमल आ’ साटिनक थिकैक । काठक सम्पूर्ण समान फर्निचरसभ इङ्गल्याण्डसँ आयल छैक, बुझलियेक ? ... डेढ़ करोड़ पड़ल छैक, डेढ़ करोड़ !! ”

आँखि फाड़ने सभ हुनकर गप्प सुनि रहल छलन्हि कि गाडीक गति किछु मध्यम भऽ गेलैक । यात्रीसभ फेर हड़बड़ाकय अपन मोटरी-चोटरीसभ मिलावय लागल । हम फेरु ठाढ़ भऽ गेलहुँ । मिसरजी हमरा अन्तिम चेतावनी देलन्हि – “ हमरा किन्हु नहि छोड़ब । ... बड्ड हुलि रहैत छैक स्टेशनपर ! ”

साँचे स्टेशनपर बड्ड धक्कमधक्का रहैक । डिब्बामे अकस्मात् कुल्लीसभक प्रवेश हुलिकें आओर कसमकस बनाय देलकैक । कोलाहल एहन जेना कतहु अकस्मात् अगिलगगी भऽ गेल होइक । एकटा छोटका कुल्ली हमरालग आयल आ’ कहलक – “ ई मोटा हम बाहर पहुँचा देब । ... अघे पैसामे ! ”

बड्ड कल्पि कऽ ओ हमरा कहने छल । ओकरा देहपर एकगोट चिथड़ीयेटा रहैक । हम मिसरजीदिसि तकलहुँ । ओ बड़ी जोड़सँ चिकरलखिन्ह – “ भागऽऽ ... ! ”

सभसँ कठिन छल प्लेटफारमसँ बाहर निकलनाई । एकटा छोटका फाटक, सेहो अघे खोलल । बीचमे ... पूर्ण अधिकारयुक्त भङ्गिमा लय एकगोट कर्मचारी ठाढ़ छल । ओकर टवीलक उजरा पेन्ट आ’ कोट रौदमे खूब चमकि रहल छलैक जेना प्लास्टर लगाकय चून पोतल होइक । कपड़ासँ वेशी ओकर कारीभाम मुहँमे लागल तेल आ’ कपारपर बाहर निकलल माथक नाइट कैपक लोलपरक पेटेन्ट चमड़ा रौदमे खूब चमकि रहल छलैक । एकवेर तऽ दहिना कातसँ निकलल हुलि हमरा धकेलैत मिसरजीक हात छोड़ा देलक । हम खूब जोड़सँ मिसरजीक माथदिसि तकैत चिचिअयलहुँ – “ मिसरजीऽऽऽ... .. ! ”

फाटकपर ठाढ़ टिकटचेकर एकवेर पूर्ण अधिकारयुक्त गम्भीर वाणीमे सभकेँ डटलक – “ एक-एक कऽ कऽ आउ ! ... ठेलमठेल नहि करु !”

कहुना कऽ मिसरजीकेँ पकड़यमे सफल भऽ गेल छलहुँ मुदा एकवेर फेरो बड़ी जोरसँ धक्कमधक्का आ’ ठेलमठेल भेलैक । हमरा फेरो धकिया कऽ अलग ठेल देलक । अपन जान आ’ काँख तरक मोटरी कहुना कऽ बचबैत हम फाटकसँ बाहर निकललहुँ । मिसरजी कहलन्हि – “ आब मोदियाइन ओतय चलू । ... ओहिठाम स्नान-ध्यान करब, ... खायब-पिअब आ’ ... फेर हम अहाँकेँ शहर देखाबय लऽ जायब । ”

स्टेशनसँ बाहर ओतेक भीड़भाड़ आ’ ठेलमठेल तऽ नहि मुदा नीक चहल-पहल, हल्ला-गुल्ला आ’ दौड़-धूप अवश्ये रहैक । स्टेशनक पछबरिया इनारपर चारुकात सयो आदमी रहल हएतैक – केओ पानि घिचैत तऽ केओ भरैत, ... केओ नहाइत तऽ केओ दाँतकेँ दतमनिसँ रगड़ैत । ... बहुतो ओहिना बहुत व्यस्त जकाँ घोलघालमे लागल चिचिया रहल छल । इनारेलगक एकगोट हलुवाईक दोकानपर पुरी छना रहल छलैक । एकटा छौड़ा हात घुमाघुमाकय बीच-बीचमे गहिंकीसभकेँ सोर कऽ रहल छलैक – “ आउ ... आउ ! शुद्ध घीकेर पुरी खाउ !! पेंडा, लड्डू ... !” सटले हलुवाई स्टूलपर बैसल कराहीमे खोलैत घीसँ फटाफट खूब फूलल गमगम करैत पुरीसभ छानि रहल छल आ’ उपर काठक चौकीपर बैसलि प्रायः ओकर कनियाँ पुरी तौलि रहलि छलैकि । मिसरजी शायद हमर लोभायल भावकेँ तारि गेल छलाह । ओ हमरा कहलन्हि – “ मोदियाइन ओतय खूब स्वादिष्ट भोजनसभ भेटैत छैक । ... दामो कम ! ”

स्टेशनसँ बाहरक दृश्यकेँ घुरिघुरि कऽ देखैत हम मिसरजीक पाछाँ चलय लगलहुँ । अनगिन्ती एक्का, सम्पत्तिक लेखे नहि । ... बुझाइत छलैक जेना बैलगाड़ीसभक तोड़ सड़कपरसँ कखनो समाप्त नहि होयत । स्टेशनक हत्तासँ सटले उत्तर-दक्षिणदिसि गेल सड़कपर सुर्खी आ’ माटिक गर्दा निरन्तर उड़ि रहल छलैक । ... तखने एकगोट गाढ़ हरियर पेन्ट कयल चमकैत फिटिन आयल जाहिमे पयरसँ दबादवाकय टन-टन घण्टी बजाओल जाऽ रहल छलैक । सड़कपर चलैत यान-वाहन आ’ लोकसभपर गर्वसँ टनटनाइत !! ... धड़फड़ाकय कात होइत मिसरजी हमरो पिचायसँ बचबैत कहलाह – “ कात होउ, कात होउ ! राजदरवारक फिटिन गाड़ी छैक । ”

दड़िभङ्गा ठीके बहुत बड़का छल, बहुतो नहि सोचल चीज-वस्तु देखि हम उत्सुक आ' भयग्रस्त भऽ गेल छलहुँ । स्टेशनसँ सटले बाहर ओहिपार एकगोट विशाल पोखरि रहैक जकर स्टेशन दिसुका कातमे एकलाइनसँ मोदीसभक दोकानसभ छलैक । ... दोकानसभ अर्थात फूसक भोपड़ीसभ । आगाँमे काठक चौकी तैपर ढाकीसभमे भरल छल चूड़ा, भुज्जा, बदाम (चना) अथवा गहुँमक सतुआ, गुड़ आ' किछु पुरान लड्डू, नोन, मिरचाई, आ' कोनो-कोनो दोकानमे दही सेहो सजाकय राखल रहैक । हमसभ ओही दोकानसभमेसँ एक कातक एकगोट दोकानमे पैसलहुँ जकर कर्ताधर्ता एकगोट नाम आ' हृष्टपुष्ट कदकाठीक सुन्नरि आकर्षक मोदिआइन छलि । मोदी छल दुब्बर-पातर प्राणी । ... नीच्चा असोराक ओरीयानीमे बीच-बीचमे खोकैत नारियलक गट्टाबला हुक्का सुड़कैत रहैत छल । मोदिआइन अपन दोकानक भोज्यसामग्रीसभक ठीक पाछाँ पलथी मारि बैसलि व्यग्र आ' चिन्तित स्वरमे पिताकय वाजि रहलि छलि – “ वैद्यलगा जा कऽ दवाई लाबक छह कि नहि ? ... कयबेर कहलियैक जे हुक्कासँ दम आओर फूलतैक मुदा धनसन ... ! ”

मोदिआइन बीच-बीचमे अपन बड़का डण्टाबला ताड़क पंखासँ एक हाथेँ अपन देहकेँ होकैत भोज्यसामग्रीसभपर भिनकैत माछी आ' बिढनीसभकेँ सेहो भगा रहलि छलि । मिसरजी ओकर पतिप्रतिक एकाग्रताकेँ भङ्ग करैत जोरसँ कहलखिन्ह – “ मोदिआइन ... ! ”

दूगोट गहिंकी (हमरासभकेँ) देखि ओकर स्वर एकदम कोमल भऽ गेलैक – “ आउ, आउ ! ... बहुत दिनपर अयलहुँ ! ... ”

ओकर उज्जर सुन्नर दाँतसभ चर्मक उठलैक । मुँहपरक मुस्की आत्मीयताक भावक सङ्केत प्रेषित कऽ रहल छलैक । हमरा देखिते अत्यन्त भावपूर्ण सिनेहसँ ओ वाजलि – “ बौआकेँ बड्डू भूख लागल हएतन्हि । ... देखू तऽ, ठोर कोना सुखा गेल छैक ! ”

हम चट्ट दऽ अपन ठोरकेँ जीभसँ चाटि भिजयबाक प्रयत्न कयलहुँ । मोदिआइन हमरासभक स्वागतमे चौकीसँ उतरलि । ओकर नमहर काठी तखन खुलि कऽ स्पष्ट भ कऽ आयल । स्थूल नमहर शरीर, ढोढीसँ उपरेक बिना बटमबला बड़का गलाक छिटक बलाउज ; पेटक कनेक नीच्चे एकगोट गिरहपर अँडल एगारह हाथक नील साड़ी, चाकर-चाकर तथा विभिन्न आकार-प्रकारक कानमे, गड़मे आ' पएरमे चानीक गहनासभ, हातमे बरोबरि नीच्चा सड़कैत बाजुबन्द आ' बेरबेर फुजैत खोपा सम्हारयलेल उठैत हाथ – एहन रहय मोदिआइन । एहन नाम मौगी

प्रायः नहिये भेटत । सेहो विहारक उत्तरी भागमे जतय मनुखक आकार सामान्यतया मझोल होइत छैक भेटक तऽ गप्पे व्यर्थ । कनेक काल हम टकीटकी लगाकय देखिते रहलहुँ । ओ भुकलि आ' हमर काँखतरक मोटरी लऽ लेलकि । ओकर बडका-बडका कारी-कारी आँखि, सुन्नर आ' समटल कारी भौ तथा पपनी, ... मुँहक रंग तऽ कारिये मुदा गढ़नि अत्यन्त नीक रहैक । स्वस्थताक चमकिसँ भरल-पूरल चमकैत मुँह बीच-बीचमे ओकर हँसनाईसँ आओर निखैरि जाइत छलैक । मोदिआइनक सामान्य मुस्कीयोमे ओकर पातर लाल ठोर आओर लाल भऽ जाइत छलैक जाहिसँ ओकर सौन्दर्य आओर बढि जाइक । ... हाथ-पयर, ... बाँह सभ पुष्ट आ' आकर्षक छलैक । ... ओतहि नीचा खोंकैत चोटकल गाल घोकचल कल्लाबला बैसल आदमीक धँसल छाती आ' हड्डी-हड्डी देखाइत शरीरकें देखि बुझाइत छलैक जेना ओ दुनू साँयबहु नहि भिन्न काल तथा स्थानक प्राणीसभ होय । ... हमरा एखन मोन पड़ैयऽ, ओकरासभकें धियापुता नहि रहैक । ... किएक तऽ हम ओतय कोनो नेनाभुटकाकें नहि देखलहुँ । ... शायद तैं मोदिआइनपर उमेरक तेहन प्रभाव नहि पडल छलैक । पता नहि, मोदिआइनक उमेरे कम छलैक अथवा वेशी होइतो बुभयमे नहि आवि रहल छलैक । ... इहो भऽ सकैछ जे ओकर उमेर यथार्थमे कम रहल हैतैक मुदा देखयमे कनेक वेशीये बुझाइक । बात चाहे जे होउक मुदा ओकरामे दुनू चीज देखाइक – परिपक्वतो आ' जुआनीक कोमलतो ।

हमराप्रतिये ओकर व्यवहार अत्यन्त आत्मीय छलैक । ओ हमरा पुछलकि – “ बौआ, दडिभङ्गा पहिलवेर अयलहुँ अछि ? ”

हम मुड़ी डोलवैत ‘ हँ ’ कहि देलैक ।

एखनतक मिसरजी अपन मोटरीसँ धोती बाहर निकालि कोँचिया नेने छलाह । मोदिआइन हमरो कहलकि – “ अहूँ नहायलेल चलि जाउ ! लगेक हड़ाहा पोखरिमे चलि जाउ । ... पानि शीतल आ' निर्मल छैक, मुदा कातेमे नहायब ! वेशी दूर नहि जायब । ... बडू गहीर अछि हड़ाहा ! ”

मोदिआइनक बातपर अनायासे हमर मुँह फुजि गेल । हम गर्वसँ कहलैक – “ हमरा हेलय अबैत अछि । ”

ओ हमरा समझओलकि – “ हेलय अबैत अछि से घमण्ड पोखरि, नदी, मोन्हि, बडका खधिया, दह लग नहि करी । ... एहिसभमे देवताक वास रहैत छैक । गर्वक बोली पसिन्न नहि होइत छन्हि हिनकासभकें ! अही हड़ाहा पोखरिमे कतेक अपनाकें बुभयबला ... ! ”

मिसरजी ओम्हर पहुँच गेल छलाह, हमरा सोर कएलन्हि – “ कतेक अवेर करैत छी, बौआ ! जल्दी आउ । ”

मोदिआइन बाजलि – “जाउ, नहाकय जल्दी आउ ! तावत हम चूड़ा, दही, गुड़ आ' मिठाई परसिकय राखि दैत छी । हे, कातेमे नहाएव ! कातेमेऽ ... !!”

ठीकेमे ओहन पोखरि हम कहियो नहि देखने रही । पूर्वरिया भीड़पर ठाढ़ भऽ पछवारी भीड़दिसि तकलापर ओम्हरका लोककेँ ठीकसँ चिन्हनाई मुश्किल छलैक । ओहिपर आम आ' सिसोक एकटा घन फुलवारी रहैक । हड़ाहा वास्तवमे अथाह आ' गहींर छल होयत । पूर्वरिया भीड़ स्टेशनदिसि भेलाक कारणेँ प्रयोगमे छल । उतरवरिया भीड़पर दने सड़क भेलाक कारणेँ ओम्हरो घाट बनल रहैक, मुदा पछवरिया आ' दछिनवरिया भीड़पर जङ्गल-भार आ' फुलवारीयेटा छलैक ।

घाटपर अङ्गा निकालैत काल हमरा मोदिआइनक चेताओनी मोन पड़ि गेल । ओ स्पष्टे ईहो भूलकोने छलि जे बहुतो आदमी एहिठाम दुबि कऽ मरि गेल अछि । हेलयमे तेजसभ सेहो । ओ एहिमे बसल देवतासभक बारेमे सेहो चेतओने छलि । हमहुँ एहि अपरिचित स्थानमे कातेमे नहाएव उचित ठनलहुँ । आकाशमे एकवेर मेघक छोटका टुकड़ी पोखरिपर छाहरि दैत ससरलैक । पोखरिक पानि अनायास ककरो तमसायल मुँह जकाँ कारी भऽ गेलैक । तखने बसातक भोकसँ सेहो ओहि पोखरिक अथाह जलराशि आन्दोलित जकाँ भऽ गेल । लाखों लघु लहरिसभ पूरा पोखरिमे व्याप्त भऽ हिलोरि मारय लागल जेना केओ ककरो एकाग्रता भङ्ग कऽ देने होइक आ' तै केओ विक्षुब्ध भऽ गेल होय । ... साँचे, हमरा डर लागि गेल । कातेमे चटपट नहाकय हम सोभे मोदिआइन लग फिरि अयलहुँ ।

मोदिआइन प्रसन्न मुद्रामे भोजन-सामग्री ओड़िओने ओकर रखवारी करैत हमर प्रतीक्षा कऽ रहलि छलि । पातर पितरिया थारीमे धोअल फुलायल चूरा तथा ओहीमे दूगोट लड्डू, नोन आ' गुड़ सेहो राखल छल । दही छाँछमे छलैक ।

मोदिआइन बाजलि – “ लियऽ, नीकसँ बैसि कऽ खाउ ! मिसरजीक रस्ता देखब आवश्यक नहि । ओ सन्ध्या कऽ कऽ अओताह । देरी लगतन्हि । बच्चासभमे एकर विचार आवश्यक नहि । ”

ओ फेरो वाजलि – “ हड़ाहा पोखरि कतेक नमहर अछि ! ...
नहि ? केहन लागल बौआ, अहाँकें ? आ’ फेरो पानि कतेक कञ्चन तथा
शीतल छैक नहि ? ”

हम पुछलिएक – “ मोदिआइन, हड़ाहा पोखरिमे देवता रहैत
छथिन्ह ? घमण्डीपर तमसा जाइत छथिन्ह ? ... कतेक आदमी डूबल
हएत एखनतक ओहि पोखरिमे ? ”

“ कतेक ने कतेक ! ... के कहि सकत ? ओ कोनो हलहा आ’
नवका पोखरि अछि से ! ... ओहिमे बड्ड उग्र देवतासभक वास छन्हि । एहि
जिल्लामे एहन दोसर पोखरि नहि छैक ! ”

हमहुँ उत्सुकतापूर्वक समर्थन करैत कहलिएक – “ हँ, से तऽ
ठीके । एहन नमहर पोखरि हमहुँ कतहु नहि देखने छलहुँ ! ”

हमरा खाइत देखि मोदिआइन अत्यन्त सिनेहपूर्वक देखैति आगाँ
वाजलि – “ बौआ, अहाँ की करैत छी ? पढ़ैत छी कि नहि ? ”

हम कहलिएक – “ पढ़ैत छी । ”

ओ घुसकिकय लग आवि फेर पुछलकि – “ की पढ़ैत छी,
बौआ ? ”

“ ए... बी... सी... डी... ”

“ पढ़िकय की करब ? ”

घरमे जेना हम अखनतक कहैत आयल छलिएक तहिना निर्भिक
भावें हम ओकरो कहलिएक – “ बड्डका आदमी बनब । ”

ओ फेरो पुछलकि – “ केहन बड्डका आदमी ? ”

हमरा एहन प्रश्नक उत्तर ज्ञात नहि छल । चुपचाप खाइत
रहलहुँ । ओ लगेमे स्थिरसँ बैसलि रहलि आ’ वाजलि – “ ... बड्डका
आदमीसभ नहि जानि कतेक किसिमक होइत अछि ? मुदा नीक आदमी
सभतरि एक्के प्रकारक भेटत ! बड्डका बनय दिसि नहि जाउ । बौआ, नीक
बनक कोशिश करु । ... नीक ! ”

कातसँ खोंकैत मोदी नकिआइत कहलकैक – “ मोदिआइन, ई
तोहर कोन आदति छैक ? ... सभकें ई उपदेशे देमय लगैत अछि ! ”

तावत मिसरजी सेहो नहा-धो कऽ आवि गेल छलाह । मोदिआइन
फुरफुराकय उठलि आ’ हुनका सम्बोधित करैत वाजलि – “ बौआ
भूखायल होयताह से सोचि हम हिनका दही चूरा खायलेल देलियन्हि । अहाँ
भानस अपने करब तऽ चाउर, दालि, घी, तेल, जारनि आदि सभ ठीकठाक

कऽ कऽ राखि देने छी । चुल्हि सहो फुकि दैत छी । आ' नहि तऽ दहीये चूड़ा खा लियऽऽऽ ... ! ”

मिसरजी कहलखिन्ह – “ आव अखन हमरा भानस करक आँट नहि रहि गेल अछि । ”

हुनकालेल दही-चूराक व्यवस्था करयहेतु मोदिआइन चौकीपर चढ़लि ।

मिसरजीकेँ खुआ-पीआकय ओ भीतर अपन घरमे गेलि । तखने मोदी सेहो खों-खों करैत ओकरहि पाछाँ भीतर गेलैक । प्रायः ओहोसभ दिनुका भोजन करय लागल छल । ... मुँहमे कौर देनहिं मोदिआइन भीतरसँ बाजलि – “कौआ-चील ने कहीं आवि जाईऽऽऽ ... । कने देखबैक । ... हम तुरते अबैत छी । ”

□□

हठात् अपन दड़िभङ्गा आवक प्रयोजनक मोन पड़िते हम व्यग्र भऽ गेलहुँ । प्रायः तखन दिनक एगारह बजैत छलैक हएत । शहरबजारक कोलाहल किछु पहरक हेतु शान्त भेल छलैक । स्टेशन शून्यसन छल, सड़कपर गाड़ी वा पैदल यात्री एकाधेटा देखयमे अबैत छलैक आ' सेहो कखनोकाल । चारुकात प्रचण्ड रौदक साम्राज्य छल । आकाशमे उपर बहुत उपर चीलसभ उड़ि रहल छल । दोकानक नीम गाछपर कौआसभ कखनो-कखनो आविकय कुचरि जाइक । कखनो-कखनो एकगोट बिलाड़ि दोकाने-दोकाने घूमैत छड़पैत नजरि पड़ैक । ... हड़ाहा पोखरिपर सूर्यक प्रखर रौद अनवरत पड़ि रहल छल, मुदा अखनो मेघक छाँह पड़िते पानि करिकका रोसनाई जकाँ कारी भऽ जाइत छलैक आ' बसातक छोटको भोंक ओहिमे असंख्य हिलकोरि उठाय पानिकेँ चञ्चल बना दैत छलैक ।

हम मिसरजी लग जाऽ कऽ जीद् करय लगलहुँ – “ शहर देखय चलूऽऽ नऽऽऽ ... ! ”

ओ आश्चर्यसँ वजलाह – “ बाप रे, एहन रौदमेऽऽऽ ... ! ”

हम जीद्पर उतरि गेलहुँ तखन ओ दिक्किआकय एकगोट एक्का भाड़ापर लेलन्हि । शहरक पूरा परिक्रमाहेतु नहि ... नगरदर्शनक पहिल पड़ावधरिक लेल मात्रहिं ! एक्का हमरासभकेँ राजदरवारतक पहुँचा देलक । ओहिठाम हमसभ उतरि गेलहुँ आ' तकरबाद पैदले देखैत-सुनैत आगाँ बढ़लहुँ । बड़ीटाके विशाल लोहाक फाटक लगसँ हमसभ ओहि

लालदरवारकेँ निहारलहुँ जकरा वारेमे रेलगाड़ीमे ओ बूढ़ा कहैत रहथि जे बनावयमे डेढ़ करोड़ लागत पड़ल छैक । जाघरि ताकि सकलहुँ तकैत रहलहुँ ओहि विशाल दरवारकेँ ! आ' तहिना ओकर बड़की फूलक बगीचाकेँ जाहिमे रङ्गविरङ्गक शोभा बढवयबला गाछ तथा फूलसभ रोपि सजाओल गेल छलैक । फाटक लग ठाढ़ बन्दूकधारी सिपाही हमरासभकेँ डपटलक – “ कथी देखैत छह, भागह एहिठामसेँ की ऽऽ ... ! ”

तकरबाद हमसभ हथिसार, घोड़सार, असबाबखाना आदि देखलहुँ । एकसँ एक चमत्कारिक वस्तुसभ देखैत सुनैत हमरासभ अन्तमे दड़िभङ्गाक बजारदिसि पैसलहुँ । तहिया दड़िभङ्गा शहर एक्के ठाम स्थित नहि रहैक – मोहल्ला-मोहल्ला, टोल-टोल आ' सेहो सभ अलग-अलग छुटल छिड़िआयल जकाँ रहैक । एक ठामसँ दोसर ठाम जायलेल छोटछीन ग्रामीण खण्डकेँ पार करहिँ पड़ैत छलैक – खेत, बारी, ताड़क बड़का-बड़का गाछक पाँतिसभ आ' ओहिमे सटल ताड़ीखानाक एकचारीसभ ! बीच-बीचमे बड़का-बड़का नालीसभमे खदवदाइत गजगज करैत टोल मोहल्लाक गन्दगी । ... शहरक बाबूसभ खपड़ाबला विशाल बङ्गलाक वरन्डामे भारी, चाकर आ' बड़का-बड़का आराम कुर्सीपर, जाहिमे आधा शरीर सुताकय आराम कएल जाइत छैक, सुतल दूपहरियाक शून्य निहारि रहल छलाह । कखनो-कखनो एकाघटा एक्का अथवा बैलगाड़ी सड़कक माटिकेँ आओर महीन गर्दा बनवैत पास करैत रहैत छल ।

दड़िभङ्गा शहरक दिनभरिक लम्बा भ्रमणसँ आँखिमे विभिन्न नव-नव दृश्यसभ संजोगैत मुदा एकदम थाकल ठेहिआयल साँभखन हमरासभ फेरो मोदिआइन लग पहुँचलहुँ । मिसरजी चौकीपर बैसिते ठेहीक कारणेँ नमहर साँस तनलनि । मोदिआइन एक बाल्टीन पानि आ' लोटा दैत कहलकन्हि – “ अहाँसभ थाकि गेल छी । ... हात-पयर धो कऽ ठेही उतारु ! देखू तऽ एहि बौआकेँ, ... बेचाराऽऽऽ ... ! ”

मोदिआइनक वचन अत्यन्त स्नेहपूर्ण रहैक । ततवे स्निग्धता नजरि आ' भावमे सेहो छल । मिसरजी उठि हाथमे लोटा लैत बजलाह – “ हम कनेक पोखरिदिसि जाइत छी । ओतहि सभ क्रियासँ निवृत्त भऽ जल्दीये आयब । तकराबाद हमरा काजसँ बाहर जयवाक अछि । ”

हमहुँ पोखरिदिसि जायलेल उठलहुँ । मुदा मोदिआइन हमरा रोकि लेलकि – “ एखन पोखरि जयवाक जरूरी नहि छैक । ... सेहो कुवेरमे । ... आ' फेर अहाँ थाकलो छी ! ”

हम ओही ठाम पीढीयेपर वैसिकय हाथ-पयर धोयलहूँ आ' लगेक अखरे चौकीपर जा कऽ पलथी मारि वैसि गेलहूँ । मोदिआइन एकगोट बड़का लालटेन लेसलकि आ' लोहाक एकगोट पातर कड़ीमे ओकरा लटकाऽ देलकैकि । तकरबाद एक-एक कऽ सभ दोकानसभमे इजोत होइत गेलैक । एक्के रत्तीमे साँभ मुन्हारि भऽ गेलैक । कीड़ा-फटिङ्गासभक तीख ध्वनि चारुभरिक वातावरणकेँ हड़होड़य लगलैक । अन्हारमे हड़ाहा पोखरि लुप्त भऽ गेल जेना निस्तब्धताक कारी धुधुर चट्टरि ओहि पोखरिपर चढ़िकऽ पसरि गेल होइक । ओहि कारी निस्तब्धताक चट्टरिपर असंख्य भगजोगानीसभ भक-भक करैत उड़य लगलैक । हमरा लागल किंवा साँभक अन्हार हड़ाहा पोखरिपर कनेक बेशीये मोटगर भऽ गेल छलैक । हम कनेक डेरायल आ' शिथिल स्वरमे पुछलिकेक – “ मोदिआइन, हड़ाहा पोखरि साँभ होइतहिं ... सभ दिन साँभखन कऽ एहने कारी भऽ जाइत अछि ? ”

ओ एकवेर हमरादिसि धुमिकय देखलकि । अन्हारक कारणेँ शायद, हमरा बुझायल जेना ओ बहुत दूर होय आ' दूरहिसँ एकटक हमरा निहारि रहल होय । कनेक दोसरे रङ्ग लागल । मुदा लगलेक ओकर स्नेहयुक्त स्निग्ध वाणीसँ हम आश्वस्त भऽ गेलहूँ – “ बौआ, हड़ाहा एकगोट विशेष प्रकारक पोखरि अछि ! ”

हम पुछलिकेक – “ केहन विशेष प्रकारक... ? ”

ओ बाजलि – “ बहुत प्राचीन पोखरि अछि ई ! ... महाभारतेक समयक थिक । तहिया एतय आटव्य जङ्गल रहैक जकरा बीचमे रहैक एकगोट छोट डबड़ा ! ”

“ तखन ? ”

“ धीरे-धीरे जङ्गल फँडाइत गेलैक । गामक बढैत क्षेत्र आ' लोकसभ जङ्गलकेँ कटैत ठेलैत गेल । कालान्तरमे अहूँठाम वस्ती वैसि गेलैक । बादमे दड़िभङ्गाक एखुनका महाराजक पुरखासभ एकरा अपन जिमदारीमे समावेश कऽ लेलन्हि । ”

मोदिआइन एकहि सुरमे सुरआयल बजैति गेलि । हम अत्यन्त थाकल छलहूँ तथापि ओकर सुरआयल स्वरसँ सम्मोहित जकाँ होइत गेलहूँ । ओ बजैति गेलि – “ जहिया ई चारुकात भारेभारसँ घेरल एकटा छोट डबड़ा जकाँ छलैक, नित्य अही पोखरिक मोहारपर वैसिकय एकगोट मलाहिन माछ बेचैति छलि । ... मलाहिन नाम, हूष्ट-पुष्ट, सुन्नरि आ' आकर्षक छलि । जेना तहिया प्रचलित रहैक ओकर पूरा देह चानीक गहनासँ छाडल

रहैत छलैक । ओकर घर कतय रहैक, ओ कतय माछ मारैत छलि से ककरो ज्ञात नहि रहैक मुदा ओकर माछ होइक नीक ! ... तैं ओकरा ओहिठाम बैसिते देरी माछ फटाफट बिका जाइक । ओ हमरा चुपचाप निसायल टकटकी लगाकय देखैत आ' सुनैत देखि बीचमे रुकि गेलि आ' पुछलकि - “ सुनैत छिएक, बौआ ! ”

हम कहललिएक - “ तखन फेर, मोदिआइन ? ”

“ जेना कि सभ दिन ओ करैत छलि एकदिन ओ माछ लऽ कऽ पोखरिक मोहारक अपन निश्चित स्थानपर आविकय बैसलि । ओहि दिन ओकर डालामे एकटा बड़का रोहु माछ रहैक । तखने दड़िभङ्गा राजाक एकगोट नामी तान्त्रिक पोखरिमे नहाकय दुर्गा कवच पाठ करैत ओही दऽ कऽ जा रहल छलाह । ओ लाल धोती, लाल कमीज आ' टोपी सेहो लाले पहिरने छलाह । मलाहिनक डालीक बड़का जुआयल रोहु हुनका खूब नीक लगलन्हि । ओ ओहि रोहु माछकेँ किनि लेलन्हि । एतेकटा बड़का माछ एक्के आदमीकेँ किनैत देखि मलाहिन बड्ड हर्षित भेलि । ओ हँसैत अपन खुशी व्यक्त करैत पण्डितजीकेँ कहलकन्हि - “ आई तऽ अहाँक भरि घरक हेतु ई पर्याप्त आ' भरिपोख हएत । ”

“ मलाहिन जखन हँसलि तऽ ओकर सजल मिलल सुन्नर चमचम करैत दाँतसभ ओकर सौन्दर्यकेँ आओर चमकाऽ देलकैक । ठोरसभ रसायल आ' लाल भऽ गेलैक । तान्त्रिक ओहि सुन्नरि नारीकेँ एकटक देखिते रहि गेलाह । तखने एकटा चील तान्त्रिकक हातक माछकेँ भ्रुपटिकय छिनि लेलक आ' उड़ि गेल । मुदा माछ भरिगर रहैक तैं चील दूर नहि लऽ जा सकल । पचासे डेगधरि लऽ गेल होयतैक कि माछ खसि पड़लैक । मलाहिन फेर एकवेर हँसलि । तान्त्रिक खूब निहारिकय ओहि मलाहिनकेँ देखलन्हि । हुनका लगलन्हि जेना हँसीक पाछाँ नुकायल चेहराक मुख्य भाग वेदनासँ भरल कोनो प्राचीन नारीक छलैक खाली हँसीयेटा ताजा आ' अखुनकाक ... । ”

“ जेना तान्त्रिककेँ एकाएक कोनो गम्भीर रहस्य बुझा गेल होइन्ह ओ मलाहिनदिसि तकैत पुछलखिन्ह - “ मलाहिन, तौं किएक हँसलह ? ... तौं के छह ? ”

“ मलाहिन बाजलि - “ हम केओ होइ ! ताहिसँ अहाँकेँ की ? हँसलहुँ एहि दुआरे जे कलियुगमे आदमीयेटा नहि खियायल पशुपक्षी सेहो खिया गेल । देखियौक ने, ओहि एकटा रोहुकेँ चील उड़ाकय नहि ढोऽ सकल । तहियाक मनुखसभ पराक्रमी आ' हाथी जकाँ शक्तिशाली होइत

छलाह । पशुपक्षीसभ सेहो ओहने बलुआर होइत छलैक । महाभारतक कालमे एकटा चील कुरुक्षेत्रसँ एकगोट योद्धाक शरीरकेँ उठाकय अही ठाम खधियामे फेंकने छल । ... कहाँ कुरुक्षेत्र आ' कहाँ दड़िभङ्गा ! कतेक दूर ! आ' सेहो एकगोट योद्धाक भारी शरीर उधैत एतय तक उड़ब ! कतेकटाक चील होइत छल हएत तहिया । कतेक बलशाली रहल हएत ! ”

“ तान्त्रिक फेर पुछलखिन्ह – “ तौं छह के ? तौं ईसभ बात कोना बुझलह ? ”

“ मलाहिनक मुस्कान हठात् हेरा गेलैक आ' मुँह विषादसँ कारी भऽ गेलैक । ओ अपन डाला उठा लेलकि – “ हम केओ होइ ताहिसँ अहाँकेँ कोन प्रयोजन ... ? ”

“तान्त्रिक किंचित अधिकारपूर्वक किछु वाजक प्रयत्न करिते छलाह मुदा मलाहिन अटेरैत आगाँ बहि गेलि । तान्त्रिक आगाँसँ बाट घेरैत रहस्य उद्घाटित करक उद्देश्यसँ कड़कैत बजलाह – “ मलाहिन, थमह ! तौं के छह से बिना बतओने नहि जा सकैत छह ! तोरा हम नहि जाय देवह । ”

“मुदा ताधरि मलाहिन बिला गेलि छलि । ने तऽ ओतय कोनो मलाहिन रहैक ने ओकर डाली । खाली तान्त्रिकक कड़कैत ध्वनि किछु कालधरि वातावरणमे गुञ्जैत रहल आ' किछुअे आगाँ खसल पड़ल ओ रोह माछ वीच-बीचमे चमकैत रहलैक । ”

हम अत्यन्त व्यग्रतासँ पुछलएक – “ तखन फेर की भेलैक, मोदिआइन ? ”

“ की होइतैक ? ओतयसँ तान्त्रिक धड़फड़ाइत सोभैँ राजदरवार गेलाह, राजाकेँ सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनोलनिह । आ' फेर तखन तान्त्रिकेक सलाहपर एहि खधियाक उत्खननक निर्णय भेल रहैक । ओहिमे महाभारत कालक योद्धासभक शरीरक कोनो हाड़ भेटतैक की से सोचि ! पाँच हजार जन छै महीनातक एकरा खनिते रहि गेलैक । बहुतो हाड़खोर भेटलैक । सभकेँ गङ्गाजीमे अनुष्ठानपूर्वक प्रवाहित कयल गेल – जेना फुलाक विर्सजन होइत छैक । तहियासँ ई खधिया उत्खननक कारणेँ एहन बड़का पोखरिक रूपमे परिणत भऽ गेल । किएक तऽ एहिमे बहुतो हाड़खोर भेटल रहैक तँ एकर नाम बादमे हड़ाहा पोखरि भऽ गेलैक । ”

अत्यन्त उत्कण्ठासँ हमर स्वर सुखा गेल छल – “ तखन ? ”

मोदिआइन बाजलि – “ इहए छैक अहि पोखरिक कथा । आब अहाँ खा पी कऽ सुतू । थाकल छी । ”

थाकल तऽ हम ठीके रही । भरि दिनक शहर प्रदक्षिणाक कारणेँ शरीर गलिकय क्लान्त भऽ गेल छल । थकानक कारणेँ बीच-बीचमे आँखि सेहो निन्नसँ मुना जाइत छल, मुदा मलाहिनक कथे एहन छलैक जे बेर-बेर उताहुल आ' उत्तेजित कऽ दैत छल । ततबेमे सन्ध्या समाप्त कऽ मिसरजी दोकानमे प्रवेश कयलन्हि आ' मोदिआइनकेँ कहलखिन्ह – “ मोदिआइन, बौआकेँ बढियाँसँ खुआ-पिआकय सुता देबन्हि । हम ओम्हरे खा लेब । राति अवेर कऽ फिरब । दू स्टेशन आगाँधरि जएवाक अछि । गाड़ी सेहो आवक समय भऽ गेल छैक । तँ हम आब जाइत छी । ”

हम दौड़िकय हुनका लग पहुँच गेलहुँ आ' जीद् करय लगलहुँ – “ हमहुँ जायब ... । ”

मिसरजी एहिबेर कहना तैयार नहि भेलाह । मोदिआइन सेहो समझओलकि – “ कहाँ जायब थाकल-ठेहिआयल शरीर लऽ कऽ रातिमे ... । चारि-पाँच घण्टामे मिसरजी चलिये अओताह । चल्, खा कऽ सुतू । भाँटाक तरुआ बना दैत छी, दूध आ' भात खा लियऽ ... । ”

मिसरजी स्टेशनदिसि विदा भऽ गोलाह । मोदिआइन चुल्हिमे बैसिकय भाँटा तड़य लागलि । भितरका कोठरीमे मोदी बैसल खोंखि रहल छल । हम कनेक काल एकसरे चौकीपर बैसल अन्हारमे डूबल दड़िभङ्गा शहरकेँ देखैत रहलहुँ । बीच-बीचमे सोभे मलाहिन ठाढ़ भऽ जाइत छलि । हम सोचय लगलहुँ ... अखन रातुक एहि निस्तब्ध अन्हारमे जे पोखरि हेरायल विलीन अछि तकरे एक कातमे ओ बैसति छलि हएत ... अही दोकानक घराड़ी लग कतहु ! हम चौकीपर बहुत कालधरि नहि बैस सकलहुँ । ससरिकय चुल्हिदिसि मोदिआइनलग पहुँच गेलहुँ । मोदिआइन वाजलि – “ बौआ, भूख लागि गेल ? ... बैसू ! आब लगचिया गेलैक, कनेकके देरी अछि । तुरते सभ किछु तैयार भऽ जायत । ”

हम कहलएक – “ मोदिआइन, महाभारत कालक लोक कहँ एतेक दिन तक जिअत ? साँचे रहैक ओ मलाहिन ? ”

ओ वाजलि – “ किया नहि जीअत ? प्रेतात्माक रुपमे जुगजुगान्तरतक जिवैत अछि लोक । अपन प्रियजनसभक लगमे रहय चाहैत अछि । कोनो ने कोनो पिआस, कोनो ने कोनो पूरा होमयसँ बाँकी कामना भीतरी आकांक्षा ओकरासभकेँ अमर जकाँ मृत्युलोकमे दृश्य-अदृश्य राखि घुमा रहल रहैत छैक । ”

हम धड़फड़ाकय पुछि बैसलएक – “ तऽ अखनो होयतैक ओ मौगी ? ”

मोदिआइन तरकारी नीचा उतारैत बाजलि – “ होयतैक ! ... लिय, अहाँ खाउ ! ”

ओ उठिकय पीढ़ी अनलकि आ' हमरा बैसयलेल देलकि । एकदम नया स्थान आ' परिवेशमे अपरिचितसनक महिलाद्वारा देल गेल दूध, भात, गुड़ आ' भाँटाक तरुआ खाइत हमरा किछु कोनादन आ' असहज जकाँ लागल । असगरपन अनुभव भेल । घर मोन पड़ि गेल । माय-बाबु, भाय-बहिन सभ केओ याद आवि गेलथि । अखनतक तऽ सभ केओ खा कऽ सुति रहल होयताह । नहि जानि, मिसरजी कखन घुरताह ? आ' कतहु नहि अयलाह तखन ? हमर मोन घबड़ाय लागल । हमरा सुतय लेल एकगोट कम्मलपर नील रङ्गक चद्दरि मोदिआइन ओछा देने छल । एकटा मैल तकिया ओहिपर रखैति ओ चौकीये परसँ हमरादिसि तकलकि आ' बाजलि – “ बौआ, खाउ ने ! किया ने खाइ छी ? जल्दी-जल्दी खाउ । भरिपेट खायब । याऽ देखू, ओछाओन ओछा देलहुँ अछि । ... अहाँक सुतयलेल । ”

हम जल्दीये खा कऽ उठि गेलहुँ आ' हाथ धो कऽ ओछाओनपर पड़ि रहलहुँ । मोदिआइन भाड़ा-वर्तन मौँजि आङ्गनमे गोलियाकय राखि देलकि । तकरावाद ओ एकगोट डिविया लेसिकय चुल्हि लग राखि देलकि आ' लालटेनकेँ मिभा देलकि । आव ओहिठाम चुल्हि लगक एकगोट धुआँ उगलैत लाल धधड़ाबला डिवियाक क्षीण प्रकाश मात्राहिं रहैक । बाहर निर्जन निस्तब्ध रात्रि आ' असंख्य कीरासभक तीख महीन आवाज व्याप्त छलैक । मोदिआइन एकवेर कोठरीमे चारुभर घुमिकय देखलकि । शायद सभ किछु ओकरा ठीकेठाक लगलैक । ओ बाजलि – “ हँ, तऽ आव सुतू । डर तऽ नहि लागत ने, बौआ ? ”

हम भीतरसँ साहस बटोरिकय कहना मुड़ी हिलबैत कहलियेक – “ नहि, हमरा डर नहि लागत ! ”

जाइत-जाइत ओ फेर बाजलि – “ हम सटले भीतुरका कोठरीमे छी । जरुरी बुझायत तऽ मोदिआइन कहि कऽ सोर करब । ठीक छै ... ?! ”

ओकरा जाइते जेना राति आओर निस्तब्ध भऽ गेल होइक ।

डिवियाक लाल शिखा कखनो-कखनो हिलि जाइक तऽ कोठरीमे सभ किछु – सम्पूर्ण छाँहसभ सेहो हिलय लगैक । भीतपरक छाँहसभ, ढुकीयाक, मोटरीक, लाठीक, बोराक छाँहसभ कखनो-कखनो दहिन-बाम करैक, हिलोरि मारिकय भुलैक तऽ कखनो एक्के ठाम थरथराय लगैक । डिवियाक बाती कखनो चट-चट कऽ कऽ चरचराइक तथा बातीक मुँहपर

कारी गिरह बनि जाइक । ... खाली धुआँक मोटगर रासि चारुदिसि चढैत उठैत रहैक । ... धीरे-धीरे हमरा मोनमे डरक सञ्चार होमय लागल । एना एकसर हम कहियो नहि सुतल रही । मलाहिनक खिस्सा ओहिना स्पष्ट देखाय लागल । ... हमर हृदय डरसँ काँपय लागल । देहक सभ रोइयाँ काँट जकाँ ठाढ़ भऽ गेल । ... तखने लागल जेना बाहरक निस्तब्धता भङ्ग भऽ गेलैक आ' पानिमे केओ छपाकसँ कुदलैक । हमरा बड्ड डर भऽ गेल आ' हम जोड़सँ चिचिअयलहुँ – “ मिसरजी \$\$\$.... .. !”

मोदिआइन भीतरेसँ पुछलकि – “ की भेल, बौआ\$\$\$.... !”

हम कहलएक – “ हड़ाहा पोखरिमे केओ छपाकसँ कुदलैक अछि ... । ”

ओ हमरा अन्ठाकय सुतक लेल कहैति वाजलि – “ सुतू, सुतू । ... पानिमे माछ कुदलैक अछि ! ”

मोदी एकभरसँ खोंखि रहल छल । बुझाइत छलैक जेना ओ अखने मरिये जयतैक । मोदिआइन नहि जानि कथी वाजलि आ' मोदीक छातीपर मालिस करय लागलि । मोदी घेघिआइत बजलैक – “ ओह ! ... बाप रे ! ... एहिसँ तऽ मरियो जइतहुँ \$\$\$... । ”

मोदिआइन कनेक पिताइत कहलकैकि – “ मोदी ! रातिमे ई की अमङ्गल बात बजैत छह । ... मालिससँ तोरा दम फुलनाई कम भऽ जयतह । कहूना सुति रहह । ”

कनेक कालक बाद भीतर कोठरीक हलचल शान्त भऽ गेलैक । अन्ततः ओसभ शायद सुति रहल छल । मोदीक साँस भारी आ' घेघिआइत चलि रहल छलैक । रातुक भयावह निस्तब्धता, डिबियाक प्रकाशक छोट घेराक बाहर चारुतरफकेर अन्हार गुजगुज परिवेश, निशाचरी कीरासभक तीख आ' महीन ध्वनिक गुञ्जन तथा एम्हर-ओम्हर हिलैत, डोलैत आ' थर-थर करैत छाँहसभ । ... हम फेर भयभीत होमय लगलहुँ । मस्तिष्कमे बेरि-बेरि उत्पन्न होइत मलाहिनक प्रेतात्माक कल्पनाक चित्रसँ हमर दम फुलय लागल । ... दिनभरिक बौअइनीक कारणेँ शरीर ओहिना थाकल आ' मलीन छल, आँखि भारी छल, भूपलाइत छलहुँ मुदा डरसँ निन्न भऽ नहि रहल छल । आँखि लगिते कनेक सपना जकाँ देखाइत छल आ' फेर डरसँ निन्न टुटि जाइत छल । ... जागलोमे आ' सपनोमे एकहि रङ्गक डराओन आकारसभ आगाँ ठाढ़ भऽ जाइत छल । हम फेर एकवेर जोड़सँ डेराकऽ चिचियाऽ उठलहुँ – “ मिसरजी \$\$\$... ! ”

मोदिआइन ' की भेल ? ... की भेल ? ' कहैत दौड़लि आयलि ।
मोदी खोँखिते रहय । मोदिआइन वाजलि - " बौआकेँ डर लागि गेलन्हि ।
... बेचारा ! अच्छा कोनो बात नहि, हम अहीं लग बैसैति छी । "

मोदिआइनक हमरालग अबिते हमर डर आव पूरे हेरा गेल छल ।
निन्न धीरे-धीरे जाँतय लागल छल कि मोदिआइन पुछलकि - " बौआ,
खिस्सा सुनक मोन करैत अछि ? सुनव तऽ सुनाउ ! "

हम हुलसिकऽ कहलिकएक - " सुनाउ ने, मोदिआइन ! "

मोदिआइन कथा सुनावय लागलि । जेना कि ओकर आदत रहैक
ओ एक्के सुरमे बजैति चलि जाइति छलि । हमरा बुभ्काय लागल जेना
दूरसँ ककरो स्वर लगातार हमर कानमे पड़ि रहल होय । ... डर हेराऽ गेल
छल तँ आव घरक भीतपरक हिलैत-डोलैत छाँहसभ खेल आ' कौतुक जकाँ
लागय लागल छल । ... दिनभरिक परिश्रम रग-रगमे निन्नक सञ्चार कऽ
रहल छल । हड़ाहामे बीच-बीचमे छप-छप सेहो होइत रहलैक जे हमरा
दूरसँ अबैत पृष्ठभूमिक आवाज जकाँ लगैत रहल । ... स्टेशनपरक
भिनसुरका कोलाहल, हुलिमालिक दृश्य, लालदरवार, हथिसार, आ' शहरक
अन्यान्य दृश्यसभ हमर थाकल मस्तिष्कसँ रङ्ग जकाँ धोआइत मलीन होबय
लागल । ... बीच-बीचमे हम औंघाइयो जाइत छलहुँ । सपनामे चित्रसभ
एकटापर दोसर-तेसर अबैत पड़ैत देखाय लगैत छल । आ' अही बीचमे
मोदिआइन निरन्तर अपन सुरमे हमरा खिस्सा सुना रहलि छलि । ओकर
स्वरमे सम्मोहन छलैक । बिहारिक पश्चात् जेना वर्षाक बुन्नसभ खसैत
रमणगर लगैत रहैत छैक ठीक तहिना हमर कानमे ओकर कोमल महीन
आवाज टपटप् कऽ पड़ि रहल छलैक । ओ कहैति गेलि - " बहुत पहिनेक
गप्प थिक । बहुतो पहिनेक ऽऽ ... भारतवर्षमे हस्तिनापुर नामक एकगोट
बड़ीटा राज्यक राजधानी रहैक । ओतक राजा रहथि धृतराष्ट्र - बूढ आ'
आन्हर ! ... आन्हर रहथि तँ गद्दीपर नहि बैसि सकलाह । परिणामस्वरुप
राजा बनक प्रश्नपर हुनक बेटा आ' भातिजसभमे कलह मचि गेलन्हि । ...
धृतराष्ट्रक रानी गान्धारी अत्यन्त पतिव्रता रहथिन्ह । जहिना हुनक पति
अपन आँखिसँ विश्वक सुन्दर रचना देखयमे असमर्थ रहथिन्ह तहिना ओहो
अपन आँखिक उपयोग नहिये करब उचित बुझलन्हि आ' तँ सदैवक हेतु
अपनो आँखिमे पट्टी बान्हि लेलन्हि । हुनका एक सय बेटा भेलन्हि जे बादमे
धृतराष्ट्रक पट्टी कौरव कहायल । जेठकाक नाम रहन्हि दुर्योधन । ...
धृतराष्ट्रक पाँचटा भातिज । सभसँ जेठ रहथिन्ह युधिष्ठिर । ई पाँचो भाई
पाण्डव कहयलाह । ... बेटा आ' भतिजामे राजक लेल कलह बहुत बढ़ि

गोलाक कारणें धृतराष्ट्र बृह-पुरानसभसँ सरसलाह कऽ भतिजासभक हेतु अलगे राज छुटियाकऽ दोसर राजधानीक बना देलखिन्ह, इन्द्रप्रस्थ ! ”

“ हस्तिनापुरसँ उत्तर-पूर्व खाण्डवप्रस्थ जङ्गलकेँ फाँड़िकऽ इन्द्रप्रस्थक स्थापना कयल गेल छल । ओहिसँ पहिने खाण्डवप्रस्थक जङ्गलमे विभिन्न जातिसभ अपन-अपन वस्तीमे निवास करैत छल । ओहीमे बहुतो ठाम आर्य परिवारसभक वस्तीसभ सेहो रहैक । इन्द्रप्रस्थक स्थापनामे ई सभ वस्तीसभ उजड़ि गेल । जङ्गलक आदिवासीसभ तऽ उत्तरभर भीतर आओर घनगर जङ्गलमे चलि गेल मुदा नया नगरक स्थापनासँ खेती-पाती कऽ कऽ बसल परिवारसभ बहुत कठिन परिस्थितिमे फँसि गेल । घरदुआर उजड़ि गेलैक । ... उजड़ल बेघर परिवारसभमे एकगोट क्षत्रिय परिवार सेहो रहैक । ओहि परिवारमे एकगोट बालिका छलि जकर नाम ... जकर नाम ... जकर नाम ... अच्छा, राखि लियऽ रहैक नारी ! नारी माने बुझैत छिएक , बौआ ? ”

“ हम क्रिया ने बुझवैक, नारीक अर्थ छिएक – मौगी ! ”

मोदिआइन वाजलि – “ हँऽऽ ..., नारी माने हमरे सनक मौगी ! बौआ, अहाँ तऽ बहुतो बुझैत जनैत छिएक ! ”

बहु संतोष भेल । मोदिआइनक प्रशंसा हमरा प्रफुल्लित कऽ देलक । ... आँखि निन्नसँ भारी भऽ गेल छल । घरोमे मायसभ सुतय कालमे एहने खिस्सासभ कहैत रहय आ’ सुनिते-सुनिते हम निन्न पड़ि जाइत रही । अखनो हमरा घरे जकाँ नीक लागि रहल छल । जेना हम घरेमे खिस्सा सुनि रहल होइ । साँचे कही तऽ हमरा लागल जेना इएह कथा हमर माय हमरा कहियो सुनोने रहय । हमरामे आह्लादक निसा चढैत चलि गेल, एकगोट अवर्णनीय आनन्दमे सन्ध्याइत चलि गेलहुँ । हम सभ किछु बिसरि गेलहुँ, खाली मोदिआइनक कोमल कण्ठेटाक आवाज आ’ ओहि आवाजद्वारा चित्रित भऽ रहल कथाक दृश्यसभ मात्रहिँ हमर चेतनामे बाँकी रहि गेल ।

“ ...नारी तहिया एकगोट छोटि नग्निका बालिका छलि । इन्द्रप्रस्थकेँ राजधानी बनावयलेल असंख्य लोकसभ ओतय आवय लगलैक । भीड़ बढ़य लगलैक । रातिदिन एक कऽ काज आगाँ बढ़ैत गेलैक । ... धीरे-धीरे नम्हर-नम्हर विशाल भवनसभ ठाढ़ होमय लागल । फूलवारी-वाटिकासभ लगाओल सजाओल गेल । मूर्तिकारसभ सुन्दर आ’ नीक-नीक आकर्षक मूर्तिसभ गढ़ि-गढ़ि कऽ विभिन्न स्थानसभपर ठाढ़ कयलन्हि । इन्द्रप्रस्थक शोभा आ’ सुन्दरता इन्द्रपुरीकेँ सेहो मात करय लागल । ... नव

निर्मित नगरमे नव-नव वस्त्राभूषणधारीसभ आविकय रहय लगलाह । गान-वाजानसँ नगर बजार रमणीय भऽ गेल । बहुतो हाथी, घोड़ा, सजल-बजल बड़का-बड़का रथसभ आयल । अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित वीर रक्षकीसभ सेहो आयल । बालिका नारी विस्मित भए आँखि फारि-फारिकय एहि सभ विराट परिवर्तनकेँ निहारति रहल । सड़कपर नाङ्गटि कुदैति, अपनेसनक अन्य बाल-बालिकासभक हुलमे एतएसँ ओतय दौड़ैति नयाँ-नयाँ चमत्कारिक दृश्यसभक ओ अवलोकन करैति गेलि । ... मुदा ओकर माय-बापक स्थिति किछु भिन्न रहैक । ओसभ अत्यन्त दुखित रहथि । घर-घराड़ी सभ किछुक हरण भऽ गेल छलन्हि । नगर स्थापनाक क्रममे बहुतो लोक जन-मजूरीमे लागि गेल रहय आ' कतेक दोसर पेशाकेँ अङ्गीकार कऽ नेने रहय । बहुतो महिलासभ गणिका वृतिमे चलि गेलि छलि ; पेट तऽ कहना येनकेन प्रकारेण पोसा जाइत रहैक मुदा अपन स्वतन्त्र खेती-पातीमे लागि आयल ओतक पूर्वनिवासी खेतिहर वृतिबलासभ अत्यन्त दुखित आ' क्षुब्ध छल । तथापि नियतिकेँ स्वीकारब छोड़ि दोसर कोनो उपाय बाँकी नहि रहैक ।

एक दिन अभूतपूर्व शोभा-सिन्दूरक आयोजन भेलैक आ' पाण्डवसभ नगरमे प्रवेश कयलथि । ओही दिन ओसभ गृहप्रवेश सेहो कयलन्हि ! बड्ड हुलि, बड्ड लोक – बड्ड विशाल आयोजन रहैक ! अनेकन् यज्ञ भेल, ब्राह्मण आ' पुरोहितसभ उच्च कण्ठसँ वेदक पाठ कयलन्हि ; अस्त्र-शस्त्रक प्रदर्शन भेलैक । उपस्थित सैनिक आ' नागरिकलोकनि पाण्डवसभक जयजयकार कयलखिन्ह । यज्ञ-धूमसँ आच्छादित आकाश बड़ी कालधरि जयध्वनिसँ प्रकम्पित होइत रहल । बालिका नारी अत्यन्त कौतुकमय भऽ उत्सुकतासँ एहि सम्पूर्ण आयोजन आ' प्रदर्शनक अवलोकन कएलकि । ओ देखलकि जे पाण्डवसभ अत्यन्त सुन्दर रहथि ... आ' द्रौपदीक रूपक वर्णन तऽ सम्भवे नहि छल । ओहुना हरेक घरमे पहिनहिसँ एकर चर्चा रहैक । ... बालिका नारी छलि तऽ बड्ड छोटि मुदा तैयो ओ भाँपि गेलि जे पाँच प्रतापी युद्ध-कुशल पुरुष-रत्नसभक सम्मिलित प्रेमपत्नी हएबाक कारणेँ द्रौपदीक नाक, भुकूटि आ' ग्रीवा गर्वसँ चढ़लि छलैक ।

पाण्डवसभ इन्द्रप्रस्थसँ दिनानुदिन अपन विस्तार होइत बढ़ैत राज्यपर शासन करय लगलाह । इन्द्रप्रस्थ धीरे-धीरे एकगोट राजधानीक अपेक्षित गति धऽ लेलक । ओतक नागरिकसभ अपन-अपन वृति आ' काजमे लागि गेल । नहुँए-नहुँए नगरक नूतनता समाप्त होमय लगलैक । विस्थापित भऽ गेल परिवारसभ सेहो एक-एक कऽ अपनाकेँ स्थापित करैत

स्थायी नागरिकक रूपमे परिणत होइत गेल । ओहोसभ क्रमशः पूर्ण रूपेण नागरिकताक नव स्वरूपकेँ ग्रहण करय लागल छल । नारी बालिकासँ नम्हर होइत गेलि । डाँड़मे डराडोरि लऽ कऽ वस्त्रखण्ड बान्हय लागलि ।

एम्हर हस्तिनापुरक दुर्योधनक दरवार आ' ... इन्द्रप्रस्थक युधिष्ठिरक दरवारमे भीतरे-भीतर नित्यप्रति प्रतिस्पर्धा बढ़िते चलि गेलैक । दुर्योधनकेँ पाण्डवक उन्नति असह्य होमय लगलन्हि ; ओम्हर पाण्डव सेहो प्रतिरक्षाक तैयारीमे जुटि गेलाह । दुनूमे युद्धे तऽ शुरु नहि भऽ गेलैक मुदा सामरिक तैयारीसभ होमय लागल ; हस्तिनापुर आ' इन्द्रप्रस्थक बीचमे एकप्रकारसँ शीतयुद्धक वातावरण बनि गेलैक । ... देखावयलेल उपरसँ दुनू औपचारिकतामे नीके सम्बन्ध रखने रहथि । दुनू परिवार सामाजिक एवम् धार्मिक अनुष्ठानसभ पारिवारिक रूपमे सम्मिलित भऽ कऽ सम्पन्न करथि मुदा तरेतर दिनानुदिन बैर-भाव बढ़िते गेलन्हि । दुनू दिसक बूढ़-पुरानसभ एकरा शान्त करक अनेकन् प्रयत्न कयलथि मुदा सफल केओ नहि भऽ सकलाह ।

एक दिन दुर्योधन द्यूत अर्थात् जुआ खेलक आयोजन कयलन्हि आ' युधिष्ठिरकेँ सेहो हँकार पठोलन्हि । तहिया द्यूत क्षात्र धर्मक अधीन मर्यादापूर्ण मनोरञ्जनक रूपमे मान्य छलैक । युधिष्ठिर पूरा दलबल सहित हस्तिनापुर अयलाह । दुर्योधन सेहो दुआरितक आविकय पाण्डवसभकेँ स्वागत सत्कार कऽ कऽ लऽ गेलखन्हि ।

कहैत छैक, दुर्योधनक मामा सकुनी कन्ना कऽ कऽ युधिष्ठिरकेँ हरेक दाओमे हरविते चलि गेलन्हि । युधिष्ठिरोपर तऽ आखिर जुआक निसे चढ़ल रहन्हि ने ओहो किएक मानितथिन्ह ! एक-एक कऽ दाओमे सभ किछु रखैत गेलाह । पहिने अपन सम्पूर्ण मुद्रा रखलनि, फेर मणि-माणिक्यादिसभ, तखन फेर अपन यावत् चल सम्पत्ति । ... बादमे जुआक रङ्ग आओर चढैत गेलन्हि । राजपाट रखैत गेलाह आऽऽ ... जखन सभ किछु हारि गेलाह तऽ अन्तमे सनकिकय अपन पत्नी द्रौपदीकेँ सेहो दाओमे राखि देलन्हि । कौरवसभक “ पड़लौऽऽऽ... ! ” तुमुल शब्दसँ द्यूत-स्थल कम्पित करैत द्रौपदीकेँ जीति लेलक । ... आ' कहैत छैक ...जे तंकरबाद ईख साधक हेतुए दुःशासन भरल सभाक मध्यमे द्रौपदीकेँ निर्वस्त्र कयलक । दुःशासन दुर्योधनक दुस्साहसी भाई छल ! ”

निर्जन निकुञ्जमे प्रवाहित निर्भरिणिक अजस्त्र ध्वनि जकाँ विनु सुस्तयने मोदिआइनक स्वर लगातार बहि रहल छलैक आ' हमर थाकल आ' निन्नसँ औघायल मन-मस्तिष्कक भितरिया तहमे ओकर मधुर आवाज

नियोजित सुरमे बजरि रहल छल । ... कखनो-कखनो लगैत छल जेना हम सुति रहल होइ आ' सपनामे चित्रसभ हमर निद्रित चेतनाक उपर एक पर एक चौपेटाइत कथाक धारावाहिक क्रममे धड़ायल जाइत होय । ... नहि जानि कखनि (?) – हमरा ठीकसँ मोन नहि पडैयऽऽऽ ... अपन सुरमे खिस्सा सुनवैति-सुनवैति मोदिआइन हमर अर्द्धचेतनामे इन्द्रप्रस्थक ओहि नारीक रूपमे परिणत भऽ गेलि । सभ किछु एकदमसँ सपनाक चलचित्र जकाँ बुझाय लागल आ' लागय लागल जेना खाली मोदिआइनक कण्ठक मोहक ध्वनियेटा हमर कानमे बाहरसँ आबि ओहि चलचित्रसँ संयोजित ओइत जाऽ रहल होय । इहो भऽ सकैछ जे हमर थाकल बाल शरीर औघाकय सुति रहल होइक आ' खिस्सा सुनक हमर उत्सुकताक जोरक कारणेँ कान खुलल अपन काज निरन्तरे रखने होय । नहि जानि कखनिसँ मोदिआइन ओहि खिस्साकेँ अपने जीवनक वृत्तान्त जकाँ सुनबय लागलि – “ हमर माय-बाप बतोने रहथि – ‘ द्रौपदीक चीरहरण एकगोट नारीक अपमानेटा नहि अछि, बड़का अपरिहार्य अनिष्टक सूचक अछि ई ! ’ घर-घरमे एकर चर्चा भेल रहैक । सभ केओ अनिष्टक आशङ्कसँ त्रस्त भऽ गेल छल । ... तकराबाद लगले पाण्डवसभकेँ बारह वर्षक हेतु वन जाय पड़लन्हि । इन्द्रप्रस्थ विरान भऽ गेल । ओहिठामक बड़का-बड़का दरवारसभ खाली भऽ गेलैक ; लोकसभक रोजीरोटी फेरसँ छिना गेलैक । जन-मजूरी कऽ कऽ खायबलासभ कामहि रहय लागल । ... ओतक नागरिकसभ एक-एक कऽ धीरे-धीरे हस्तिनापुर जायलेल बाध्य भऽ गेल । इन्द्रप्रस्थ एकदम शून्य आ' खाली-खाली भऽ गेलैक ।

हमर परिवार क्षत्रिय छल । बाबु इन्द्रप्रस्थक पाण्डव दरवारमे रक्षक दलक निचका श्रेणीक पदाधिकारी रहथि । हमरासभक खेती-पाती छिना गेल छल तँ बाबुकेँ बाध्यतावश निचको श्रेणीक नोकरी करय पड़ल रहन्हि जाहिसँ कहनाकय नव रूपमे हमरासभ अपन जीवन यापन कऽ रहल छलहुँ । मिलाजुलाकय हमसभ फेरसँ निफिकरि जकाँ भऽ गेल छलहुँ मुदा फेरो ओहो छिना गेल । पाण्डवसभक वन निर्वासनक बाद इन्द्रप्रस्थपर दुर्योधनक कब्जा भऽ गेलन्हि आ' ओतक (इन्द्रप्रस्थ दरवारक) सभ रक्षकसभ सेवामुक्त भऽ गेल । कहाँदोन पाण्डव-पक्षधरसभकेँ रखलासँ कौरवसभक सुरक्षाक स्थिति कमजोर भऽ जइतन्हि तँ पाण्डवपक्षीय सभकेँ हटा देल गेल रहैक । एहिसँ हमरासभक परिवार फेरो प्रकोपित भऽ गेल छल । हमरासभ सन दुखित परिवार बहुतो ... बुझू तऽ असंख्ये रहैक । ओसभ पश्चिमक बड़का राजधानी हस्तिनापुरदिस अपन जीवन

जीविकाहेतु आगाँ बढ़ल । हमहुँसभ ओकरेसभक संग पक्तिवद्ध भऽ हस्तिनापुर पहुँचलहुँ ।

हम तहिया आठ-नौ वर्षक रहल छलि हएव । माय-बाबु, हम आ' हमर चारि वर्षक भाय शरणार्थीक रूपमे हस्तिनापुर अयलहुँ । मुदा ओहिठाम हमरा क्षत्रियसभक सम्मान अनुकूलक काज कतय भेटति ? पाण्डव पक्षीय हएवाक कारणेँ कौरवक सेनामे प्रवेश हमरासभक हेतु वर्जित रहैक । बाबु सेहो सभतरि सगर्व अपनाकेँ पाण्डवपक्षीये घोषित करथि । ... हमसभ काजक खोजीमे कतय- कतय ने बौअयलहुँ, की की नहि कयलहुँ ? कोनो उपाय नहि लागल । अन्तमे जमुनाक तटपर कौरवसभक दरवारक बहरिया दिवालोकें बहुत बाहर जतय बकाइन आ' बबूरसभक छोट-छोट भाड़ी आ' नहि जानि कथिक-कथिक जङ्गल-भाड़ रहैक तथा दिवाल बनावय बेरसँ फेकल-फाकल छोट-नम्हर विभिन्न रङ्गक पाथरसभ छिड़िआयल रहैक, हमसभ एकगोट मडैया बनाकय रहय लगलहुँ । हमरासभक वास नगरसँ बाहर आ' जङ्गलसँ सटल छल । बाबु भरि दिन नगरमे काज करथि आ' जे जतवे कमाथि तहीसँ हमरासभक गुजरि चलि जाइत छल ।

अहिना बढ़ैत गेलहुँ, वयस चढ़ैत गेल । ... जुआन भेलहुँ तथा यौवनक प्रथम सोपानपर अपनाकेँ ठाढ़ पयलहुँ । माय कहय लागलि – “ नारी, तौ बड्ड सुन्नरि छे । तोहर देह आ' गढ़नि बड्ड सहेजलि आ' समटलि छौक । ... रानी बनय योग्य छे तौ ! ” ... हम गर्वसँ फुलि जाइत रही । एकान्तमे जा कऽ जङ्गली हरियरीसँ अपनाकेँ श्रृङ्गारैति रही आ' बहुतो-बहुतो कालधरि अपन रूपकेँ एकसरे निहारैति रही । हम कनेक नाम रही, कस्सल देह ... पोर-पोर नीचासँ उपरधरि मिलल हमर शरीरक बनोट रहैक । तहिया कोनो काज धन्धा तऽ छल नहि, तँ हम जङ्गलमे बरोबरि एम्हर-ओम्हर बौआइति फुदकैति रही । ओहिना ... हरिणीक चालिमे ... ! मृगयाहेतु हस्तिनापुरसँ राजकुमारसभ ओहि जङ्गलमे बरोबरि आबथि जाथि । तखन हमर माय हड़बड़ाकय हमरा मडैयामे ठेलि देअय आ' कहय – “ तोराऽऽ ... ! देखि लेतौक तऽ उठाकय लऽ जयतौक दरवारमे ... आ' नर्तकी बना देतौक ! कहियो नहि बिसरिहँ जो तौ क्षत्रिय कुमारी छेऽऽ... ! ”

अपन मडैयाक भूरदने हम शिकार खेलय आयल राजकुमारसभकेँ देखैति छलहुँ आ' हुनकेसभक संग आयल ओहने तेजस्वी घोडापर चढ़ल शिकारी सैनिकसभकेँ सहो निहारैति रहैति छलहुँ । हमरा ओ पुरुषसभ बड्ड नीक आ' आकर्षक लगैत छल ।

एक दिन हम जङ्गलमे एम्हर-ओम्हर ओहिना घुमैति-बौआति चलि जाइति रही । चैत महीना रहैक । जङ्गलक वातावरण हिलैत-डोलैत फूल आ'लतिकासभक सुगन्धसँ गमगमा रहल छलैक । चिरई चुनमुनसभ गाछसभपर फुदकैत चिरविर कय रहल छल । कखनो-कखनो कोईलीक तीख स्वर जङ्गलकेँ भुमाऽ दैत छलैक । ओहि दिन हमहुँ अपनाकेँ रङ्गविरङ्गी फूलसभसँ श्रृङ्गारने रही । तखने अपन दलसँ विछुड़ल एकगोट अश्वारोही हमरासँ सटले कनेके दूर ठाढ़ नजरि पड़ल । तखन सूर्यक रश्मि ओकर मुँहपर सोभे पड़ैत रहैक आ' घामक कारणेँ भीजल ओकर रक्तम अनुहार चमकैत रहैक । हमरा बुझायल जेना कतौक कोनो विशिष्ट ज्योति चमकि रहल होइक । ओकर गर्दनपर लटकल कारी-कारी केशसभ घोड़ाक चालिक संगहिं उपर-नीचा होइत छलैक । ... तखन हम ओहि विराट जङ्गलमे एकसरि छलहुँ ; सेहो एकगोट सैनिक वेशधारी अत्यन्त सुन्दर युवककेर ठीक आगाँ । हमरा बड्ड लाज लागि रहल छल । हम चट्ट एकगोट मौलश्री फूलक भ्वाङ्क ओटमे अपनाकेँ नुकावक प्रयत्न कयलहुँ । आ' कातेसँ हलकी दए ओकर सुन्दरताकेँ निहारैति रहलहुँ । ओहो हमरा देखि नेने छल । अत्यन्त सहजतासँ ओ अपन घोड़ाकेँ लगेमे सटले ठाढ़ कऽ नीचा उतरल तथा डेग बढ़वैत हमरादिसि बढ़ल । ... हमरासभ एक दोसरकेँ टकटकी लगाकय देखि रहल छलहुँ । ओ अत्यन्त भद्रतासँ वाजल – “ हे सुन्दरी, अहाँ के छी ? अप्सरा, किन्नरी वा गन्धर्व ? मनुख तऽ अहाँ निश्चय नहि छी । पृथ्वीपर एहन सुन्दरता सम्भवे नहि अछि ! ... किन्हु नहि !! ”

हमरा बुझायल जेना हमर कानमे केओ अमृत चुआ देने होय । हम अपनाकेँ सभ्हारैति कहलएक – “ हम एकगोट मानव नारी छी । ... क्षत्रिय कुमारी ! ”

तकराबाद हम ओकरा देखय नहि सकलएक । मुड़ी खसाकय नीचा तकैत पयरक औठासँ माटि कोरिते रहि गेलएक ! ... अही ठामसँ हमरासभक प्रेम शुरु भऽ गेल छल, अकस्मात् आ' प्रथमे दृष्टिसँ !

जेना पहिने होइक, हमरासभक स्वयंवर तखने जङ्गलमे भऽ गेल । तकर तुरतबाद तत्क्षणे हम हुनका अपन मायसँ भेंट करावय हेतु हमरासभक मड़ैयामे लऽ गेलअन्हि । हमरा मायकेँ ओ कहलखिन्ह – “ माता, हम कौरव पक्षीय सैनिक छी । आई अहाँक सुन्नरि बेटीक पति होमक सौभाग्य पावि अपनाकेँ अत्यन्त हर्षित अनुभव कय रहल छी ... । ”

साँझखन बाबुओ अयलखिन्ह तऽ हमर वरकेँ देखि ओहो बहुत प्रसन्न भेलखिन्ह आ' कहलखिन्ह – “ हमरासभ पाण्डव पक्षीय छी तथापि एकर कोनो अर्थ आ' चर्च आवश्यक नहि ! ... हमरासभक बेटी एकगोट योग्य क्षत्रिय कुमारकेँ अपन वर चुनलकि अछि, इहए हमरासभक हेतु अत्यन्त प्रसन्नता आ' सन्तोषक विषय थिक । ”

हमर पति हमरा ओही राति अपनासंगेँ घोड़ापर बैसाकय अपन घर लऽ गेलाह । माय सिसकैत, बाबु आर्शीवाद दऽ कऽ आ' हमर छोट भाय ' जल्दीये भेंट करय आयब । ' कहि आश्वस्त करैत हमरासभकेँ विदा कयलन्हि । एकटा पुरुषकेर सुसुम स्पर्शसँ रोमाञ्चित होइत, हृदयमे माय-बाबु आ' भायक स्नेहकेँ सहेजैत हम अपन पतिक संग पत्नीक रूपमे सासुर विदा भेलहुँ । ... हमरासभक गाम हस्तिनापुरसँ कनेक उत्तर-पश्चिम दिशामे छल । मध्य रातिमे हमरासभ घर पहुँचल एब । हमर पति पहिने नीचा कूदिकय हमरा सहारा दैत घोड़ापरसँ उतारलन्हि । अन्हारमे ओ अपन मायकेँ घरक केबार खोलय हेतु सोर करैत कहलखिन्ह – “ माय, देख तऽ आइ हम केहन सनेस अनलहुँ अछि ! ... कनेक जल्दी केबार खोल तऽ !! ” आ' ओ हमरादिसि तकलन्हि । हम सिनेहसँ गुदगुदाइत हुनकासँ आओर सटि गेलहुँ ।

हमर सासु केबार खोललखिन्ह आ' हमरासभकेँ देखि हाथक डिविया कनेक उपर उठोलखिन्ह – नीक जकाँ देखयवास्ते । अत्यन्त लगसँ एक क्षण ओ गौरसँ हमरा देखललन्हि । तत्क्षण स्नेहक लहरि जेना हुनकर सम्पूर्ण शरीरपर पसरि गेल होइन्ह ओ हुलसि कऽ बजलीह– “ कनियाँ, आउ ! आउ, आउ !! ... अपन घरमे आउ ! ”

तत्पश्चात् ओ अपन बेटीकेँ कहलखिन्ह – “ साक्षात लक्ष्मीकेँ तौ घरमे अनलह अछि ! हमर लक्ष्मी स्वरुपा पुतहुक सदैव पूरा सम्मान हएबाक चाही ! ”

हमरासभक परिवार छोटे छल, जमाजमी चारि गोटेक । सासु, देओर आ' हमसभ दूगोटे ! मुदा पारस्परिक समन्वय, सिनेह आ' पति-पत्नी बीच हमरासभक प्रणय घरकेँ स्वर्ग बना देने छलैक । स्वर्गमे एहिसँ वेशी आनन्द पाएब निश्चिते सम्भव नहि हएत !

गाम जङ्गलसँ सटले रहैक - क्षत्रियसभक एकगोट छोटका गाम ! सभ परिवारक मुख्य आ' खास पेशा छलैक तऽ खेतीये तथापि जाहि घरमे समाङ्क संख्या वेशी रहैक ओहिमेसँ केओ-केओ सैनिक सेवामे नोकरीहेतु हस्तिनापुर चलि जाइत छल । हमरासभकेँ कम्मे खेत-पथार रहय तँ हमर

वरकें सैनिक सेवामे नोकरी करय जाय पड़ल रहन्हि । अपन योग्यतासँ ओ सेनामे नीक पदोन्नति करैत आगाँ बढ़ैत जाइत छलाह । भरि दिन हस्तिनापुरमे रहैत छलाह आ' साँभू पड़ितहिं घोड़ा दौड़वैत घर घुरि अबैत छलाह । एहिपर हमरादिस ताकि-ताकि कऽ हमर सासु उठ्यो करथिन्ह – “ आइकाल्हि हमर जेठकामे घरक बेश मोह उमड़ि अयलैक अछि ! ”

तहियाक हमर दिनसभ बड्ड नीक आ' रमनगर छल । ओतक सभ समतुरिया बेटी-पुतहुसभ हमर मितिन बनि गेलि छलि । हमसभ भ्रुण्ड बना-बना कऽ खेतमे घुमैति रही । जङ्गलमे गायमाल चरबौति रही आ' घासपात तथा जारनि-काठी बटोरिकय अनैति रही । ... हमरासभक गामेक कातमे एकटा कुण्ड रहैक । ओहि कुण्डक भीड़पर एकगोट विशाल सूर्यमन्दिर रहैक । आ' तँ ओहि कुण्डकें लोक सूर्यकुण्ड कहैक । पावनि-तिहारमे ओतय मेला लगैक । खास कऽ सूर्यग्रहणमे खूब नमहर मेला लागि जाइक । बड्ड भीड़ आ' ठेलमठेल भऽ जाइक । ... आन दिन ओहिठामक वातावरण शान्त आ' स्थिर रहैत छलैक । हमसभ गामक मौगीमेहरसभ संग मिलाकय ओतहि जाई आ' मोहारपर वैसिकय बहुतो कालधरि बतिआई, हँस्सी-ठट्टा करी, खेली-कूदी । ... हमरासभ अहिना अपन समय व्यतीत करैत रही । कहियो-कहियो सभक मोन भऽ जाइक तऽ वस्त्र निकालि नहाय लागी ! संगीसभ हमर देह देखिते कहय लगैक – “ नारी, बड्ड सुन्नरि छे, तौ ! तोरा देखिकय हमरासभकें इर्ष्या होइत अछि । गृहस्थ स्त्रीकें एतेक सुन्नरि नहि होयवाक चाही ! ”

हमरा लागय लागल जेना जीवन कहियो नहि सठयबला बसन्त थिक ! ... तहिया सम्पूर्ण देशक वातावरण शान्त आ' सुखमय रहैक । दुर्योधनक प्रताप चारुभर व्याप्त भऽ गेल छलन्हि । हुनकर सभ शत्रु पराजित भऽ गेल छल । पाण्डवक सन्दर्भ सेहो लोक बिसरि गेल रहय । पतिप्रतिक हमर प्रेम आओर बढ़िते जाऽ रहल छल । प्रत्येक दिन साँभू कऽ हम दुआरिपर ठाढ़ भऽ हुनकर बाट देखी । आह ! तहियाक रमणीय रातिसभ.... हम कहियो कोना बिसरि सकैति छी ! ... प्रेम आ' आलिङ्गनसँ भरल ... आनन्दक क्षणसँ कसल रातिसभकें के बिसरि सकैत अछि ? कहियो-कहियो हमर पति दरबारक चर्च करथि आ' कर्हाथि – “ पाण्डवसभक वनवासक बारह वर्ष बिति गेलन्हि । गुप्तवास सेहो अब जल्दीये समाप्त भऽ जायत । ”

हम कहियन्हि – “ अब पाण्डवसभ फेरो अओताह ? ओसभ एतय शान्ति समाप्त कऽ कलह मचावय थोरहिं घुरताह ? ”

तथापि कहियो काल कऽ हमरो मोन दुश्चिन्तासँ भरि जाय । ... कहुँ कतहुँसँ हमर सुखी आ' आनन्दसँ भरल एहि जीवनकेँ किछु खलबला तऽ नहि देत ? कोनो दुर्दिन तऽ नहि आवि जायत ? मुदा मोन फेर स्थिर सेहो भऽ जाय । कतहुँ किछु तेहन अशुभ नहि देखाय । सुख छिनयबला कारी मेघक कोनो छाँहो नजरिपर नहि उतरय ।

अहिना अत्यन्त आनन्द आ' परमसुख भोगैत दिन विता रहल छलहुँ । हमरेटा नहि सभ नारीसभ अपन-अपन पति प्रेममे विभोरि छलि । शान्तिक वातावरण छलैक । युद्धक आशङ्का एकलेखे बिला गेल रहैक । सूर्यकुण्डमे एक दिन सखीसभ हँसैति-खेलैत खुशीयो मनोलहुँ – “ आव मनुख युद्धसँ मुक्ति पावि लेलक....! ”

मुदा आनन्दक क्षण जेना साँचे केओ छिनि नेने होय ! ... एकदिन हमर पति बहुत राति कऽ घुरलाह । अनुहार एकदम थाकल ठेहिआयल आ' करिआयल रहन्हि । हमर मोन आशङ्कासँ भरि गेल – “ की, कोनो तेहन खबरि अछि ? ”

“ पाण्डवसभ विराट राजाक दरबारमे छथि । एक वर्षक वनवासक समाप्तिपर ओसभ राजा दुर्योधनकेँ अपन राज फिर्ता करयलेल समाद पठोलन्हि अछि । ” – ओ स्थिरसँ निश्वास छोड़ैत उत्तर देलन्हि ।

हम व्यग्रतासँ पुछलियन्हि – “ आव की हएत ? ”

ओ आओर गम्भीर होइत बतओलन्हि – “ राजा दुर्योधन विराट राजाक दूतकेँ नहि नीक जकाँ तिरस्कार कऽ घुरा देलखन्हि ! ”

□□

एकरावाद हमरासभक दुःखक दिन शुरु भऽ गेल । चारुकातसँ दुश्चिन्ता घेर लेलक । रातुक प्रणयमे सेहो आव खिन्नताक बोध होमय लागल, दिवसक घड़ी तऽ ओहिना उदासीनतासँ भरल कोंचल रहिते छल । एहन अवस्था हमरेटा नहि छल । सभ नारीसभक इहए हाल रहैक । सूर्यकुण्डपर जमा भऽ कऽ हमरासभ अपन-अपन पतिद्वारा प्राप्त समाचारसभक जोड़-तोड़ तथा गन्थन-मन्थन करैत रही आ' चिन्ता-दुश्चिन्तामे समय बितवैति रही । ककरो समय अनुकूल नहि बुझाइक । उत्पन्न परिस्थितिकेँ केओ दुर्दिनक लक्षण कहय तऽ केओ अकछिकय बाजि उठय – “ देखही, ओहि दक्षिणवरिया कातसँ उठैत बसातकेँ ... केहन गरम आ' उसनियाँक भाप जकाँ बुझाइत छैक ! ”

सूर्यकुण्डक दक्षिण-पश्चिम दिशामे छोट-छोट विभिन्न आकारक पाथरसभसँ पाटल विशाल बाँझ परती खाली क्षेत्र रहैक जाहिमे काँटक भाड़, घासक भडखोर तथा कुश छाड़ि आर किछु नहि होइक । ओहि परतीक बाँझ चरित्र हमरासभकेँ नहि जानि किएक शुरुअसँ बड्ड डराओन लागय । ... गर्मीमे तऽ ओतक टटायल धरती ताओसँ धीप जाइक । दूरसँ ओहिमेसँ निकलैत भाफ देखिकऽ लगैक जेना ओकर माटिक तरमे कोनो अग्निकुण्ड हरहराइत प्रज्वलित रहल होइक । उपर वायुमे धधरा जकाँ गरम बसात स्पष्ट देखयमे अबैक । आ' फेर बरखामे ततेक ने पानि पडैक जे बुझाइक आकाश फाटिकऽ खसि पड़तैक । इन्द्रक बज्र क्षण-क्षणमे भयङ्कर गर्जन करैत ओहि धरतीपर बेरि-बेरि बजरैक । बसन्तक कोमल ऋतुमे सेहो ओहिठामक वायुमे रमणीयता नहि अनसोहाओन सरसराहटि आ' उदास मनक उच्छ्वास रहैत छल । ... ओ विशाल बाँझ भूमिखण्ड हमरासभकेँ कहियो नीक नहि लागल । सदिखन भूतहा जकाँ बुझाय । हमरासभ अपनामे बतिआई – “ ओ स्थान अपसगुनी अछि, पापी अछि आ' तैं तऽ ओतक माटि बाँझ थिकैक । ... ओतय केओ अपन घर नहि बनोलक ने तऽ केओ ओतय हरे जोतलक । फलोफूलक बगानहेतु ककरो उपयुक्त नहि बुझयलैक, ई बाँझ क्षेत्र ककरो पसिन्न नहि भेलैक । तैं केओ ओकरा नहि अपनओलक ! अपन नहि बनोलक !! ओ रजेक जमीन रहि गेलैक सभदिन, कुरु राजासभक सरकारी जमीन । आ' तैं ओहि भूमिकेँ लोक कुरुक्षेत्र कहैक । ”

धीपल भड्डकाओन घूर्ण वायुपर खौंभाइत हमर एकगोट मितिन एक दिन बाजलि रहय – “ देखही तऽ, केहन राक्षसी बसात अछि । खाँ-खाँ करैत बहैत अछि ... ! ”

कहियो काल हमसभ एक-दोसरकेँ ढाढ़स दिएकि – “ कौरव तथा पाण्डवक बीच मेलमिलापक पूरा प्रयत्न भऽ रहल छैक । दुर्योधनकेँ हुनकर अपनो पक्षक बूढ़-पुरानसभ बुझावक यत्नमे लागल छथि । सभ केओ भीरल छथिन्ह । ... ओम्हर युधिष्ठिर सेहो पाँचेटा गामसँ सन्तोष करक उदारता व्यक्त कऽ रहल छथिन्ह । ”

कहियो सुनिऐक – “ धर्मात्मा युधिष्ठिरमे लडिकय राज्य प्राप्तिक कनेको आकांक्षा नहि छन्हि । हमरासभ हुनका ‘ धन्य पुरुष ! ’ कहियन्हि मुदा तखने केओ कहय आवय जे भीम तामसे ताल ठोकि-ठोकि कऽ उत्तेजनामे कौरवपक्षकेँ ललकारैत रहैत छथिन्ह । ... कहाँदोन द्रौपदी सेहो सभकेँ स्थिर होइत देखि धिक्कारैति कहलखिन्ह – “ हे तथाकथित हमर

वीर पतिसभ ! की अहाँसभ भरल राजसभामे कयल गेल हमर बेइजति बिसरि गेलहुँ ... ? ”

द्रौपदीक एहन ईख वचन हमरासभकेँ नारीक मर्यादाक अनुरूप नहि लागय । हमसभ अपनाकेँ कहिऐक – “ तेरह बरख पहिनेक असम्मानक प्रतिशोध राखि एकगोट नारीकेँ अपन पुरुषकेँ युद्धहेतु उत्तेजित नहि करक चाही । ई तऽ अपन सुलभ नारीत्वकेँ तिलाञ्जलि देब अछि । ”

अही बीचमे हल्ला उठलैक जे द्वारिकासँ कृष्ण मध्यस्थताक हेतु आयल छथि । हमरासभक साँस घुरल । जाहि वृष्णि वंशक राज्य समुद्रधरि फैलल छल ततक नेता ओहि प्रतापी वीर पुरुषक नाम के नहि सुनने छल हएत ? मथुरा आ' गोकुलमे यदुवंश शिरोमणिद्वारा भेल लीलासभक खिस्सा तहिया स्त्रीगणसभमे बेश चर्चाक विषय रहैक । सभक हृदयमे हुनकालेल उत्सुकता रहन्हि । ... यद्यपि ओ पाण्डवसभक कुटुम्ब रहथिन्ह, हुनकेसभक पक्ष सेहो लेथिन्ह तथापि हमरासभकेँ हुनकापर पूरा विश्वास आ' श्रद्धा रहय । हुनकर मध्यस्थता असफल हएबे नहि करत, अवश्ये सफल हएत से सभक विश्वास रहैक । ... बहुतो हुनका देवताक अवतार मानि पूजा करन्हि । ‘ ओ की ने कऽ सकैऽ छथि ? ’ – अपनाकेँ आश्वस्त करयहेतु हम मितिनसभ एक-दोसरिकेँ पूछिऐकि आ' अपने उत्तरो दिऐकि । हम तऽ विश्वस्त भऽ गेलहुँ, आब हमरासभक सुखमय जीवनक आकाशमे छाएल कारी मेघ निश्चिते बिला जाएत । हम फेरसँ पहिनहिं जकाँ उत्सुकतापूर्वक साँभूखन कऽ दुआरिपर अपन पतिक प्रतीक्षा करय लगलहुँ ।

हमर देओर पाथरपर अपन हथियार चमकऽवैत कहथिन्ह – “ भौजी, नहि जानि कतेक पाण्डवसभक माथक रक्त ई पिअत ? ” हमरा कनेको नीक नहि लागय । पिताकय कहिऐकि – “ केहन अशुभ वचन निकालैत छी अहाँ, बौआ ! आ' सेहो साँभूक पहर ... । अहाँकेँ शान्ति आ' मेलमिलाप नीक नहि लगैत अछि ? छि : ! ”

रातिमे अपन पतिक कारी केशसँ छारल गरम छातीकेँ स्नेहसँ स्पर्श करैति, मलैति आ' आओर कसियाकय हुनकासँ सटौत आश्वस्त भावें हम कहलियन्हि – “ प्राणनाथ, श्रीकृष्णक प्रयत्नसँ अवश्य मेल भऽ जाएत । आब हमरासभ अहिना प्रणयक राति निर्बाध रूपसँ मना सकब ! ”

हुनकर उत्तर ततेक आश्वस्तकारी नहि छल । ओ कहलन्हि – “ कोना कहूँ जे की हएत प्राणप्यारी ! अपनासभक राजा दुर्योधन पाण्डवसभकेँ सुइयोक नोक जतेक माटि नहि देब से कहि रहल छथिन्ह ।

जीदपर अडल छथि । ... एम्हर श्रीकृष्ण आयल तऽ छथि मेलमिलापक प्रस्ताव लऽ कऽ मुदा छथि पाण्डवसभक पक्षमे ... आ' हुनकासभकेँ युद्धहेतु भीतरे-भीतर उकसा सेहो रहल छथि । ”

हमरासभक प्रणय-रात्रि फेरो सेरा गेल आ' सदैव जकाँ भोरे प्राणनाथ घोड़ापर सवार भऽ हस्तिनापुर चलि गेलाह ।

दुपहरियामे फेर हम सभ मिलिन सूर्यकृण्डक पाथरक घाटपर जमा भेलहुँ । सभक कथन एकहि रङ्गक छलौक – श्रीकृष्ण छल कऽ रहल छथि ! शुद्ध मनसँ मध्यस्थता नहि कऽ रहल छथि । केओ-केओ तऽ इहो वाजलि जे कृष्ण भगवानक अवतार छथि आ' पृथ्वीक भार हरन करयहेतु समर रचावयलेल मृत्युलोकपर आयल छथि ।

समर शब्देसँ हमरासभक हृदय भयसँ भीतरसँ काँपि गेल । डरसँ थरथराइत नारीसभ अपन-अपन पति, भाय, पिता आ' बन्धु-बान्धवसभक हेतु ईश्वरसँ मोनहिं मोन प्रार्थना करय लागलि – “ हे भगवान ! सभक रक्षा करु । ” हम यौवनक प्रथम प्रहरमे प्रवेशहिं कएने नारी बाणसँ आहति हरिणी जकाँ छटपटा गेलहुँ आ' काँपिकय वाजि उठलहुँ – “ हे प्रभु ! हमर माँगक सिन्दूर ... हे परमात्मा कहियो ने पोछह ! ”

मुदा कोनो भगवान भारतवर्षक कोन-कोनसँ उठल सम्पूर्ण नारी कण्ठक एहि आर्त पुकारपर किंचित ध्यान नहि देलखिन्ह । दिन-प्रतिदिन दुनू पक्षसँ लड़ाईक तैयारी जोड़तोड़सँ होमय लागल । दूत आ' तेज घोड़ा दऽ दऽ कऽ अपन पक्षमे मिलावयहेतु भारतवर्षेटा नहि दूर बहुत दूर देशदेशावरक राजासभलग दूतसभ पठाओल गेल । राजासभ मोटामोटी रक्तसम्बन्ध अनुसार कौरव आ' पाण्डव पक्षमे विभाजित भऽ ठाढ़ होइत गेलाह । कृष्ण कहाँदोन अर्जुन आ' दुर्योधन दुनूकेँ पुछलखिन्ह – ‘ एकदिस एक अक्षौहिणी सेना रहत तऽ दोसरदिस हम एकसरे रहब, कोन लेब ? ’ दुर्योधन अक्षौहिणी सेना चुनलथि । अर्जुन – ‘ यतो कृष्णस्ततो जय : ’ कहैत कृष्णकेँ चुनलन्हि । दुनू पक्ष एक दोसरकेँ तोड़क, फुटाबक सम्पूर्ण यत्न कयलक । एक दिन कुन्तीयो नुकाकय अपन जारज पुत्र कर्णलग जाऽ कऽ कहलखिन्ह – “ पुत्र, अहाँ पाण्डवदिस लागि जाउ ! ” सुनैत छिएक कहाँदोन कर्ण कहलखिन्ह – “ कि तऽ अर्जुन रहत कि हम रहब, अहाँक पाँचटा पुत्र तऽ रहबे करत ने ! ”

दुहू पक्षक सेना सुसंगठित सुसज्जित होइत एकत्रित होमय लागल । दुहू पक्षक ओहन विराट् सेनाकेँ एकत्रित भऽ अँटय जोगर दोसर कोनो स्थान आओर कतय भेटितैक ? ओहन स्थान तऽ एकमात्र

हमरासभक गामक सूर्यकुण्डक दछिन-पछिमवरिया विशाल परती कुरुक्षेत्रेटा रहैक । तै दुनू पक्षक सेना ओतहि जमा भेलैक । पुरुषसभ युद्धक उतेजनासँ धिपैत खराइत गेल । ओसभ एम्हर-ओम्हर दौड़य, लाबय-ओसारय, धरय-नुकावय ; नहि जानि किएक आ' कथीमे व्यस्त रहय । ओकरासभसँ नारीसभक भेंटघाँट सेहो दिन-दिन कठीन होइत गेलैक । एम्हर भयग्रस्त स्त्रीगणसभकेँ कतहु कोनो त्राणक बाट नहि देखाइक । सभ छटपटाइक, बेचैन रहैक । कखनो-कखनो भयसँ हमर दम फुल जाय । असख्य सेना, रथसभक पहिया, हाथीक पए आ' घोड़ाक टापसँ उड़ल गर्दक कारणेँ आकाश भँपा कऽ अन्हार भऽ जाइक । हमरासभक खेतक सम्पूर्ण वाली निर्दयतापूर्वक पिचरा-पिचरा कऽ देल गेल । सभ किछु माँटिमे सना गेलैक । ओम्हर खाली बीच-बीचमे तुमुल घोष, शंखक ध्वनि आ' नगाराक गड़गड़ाहट होइक । आ' एम्हर अपन छोट नेना भुटकाकेँ छातीसँ लगाकय त्राहि-त्राहि करैत मातासभक क्रन्दन सुनाइक ।

तैयो, ... मृत्युक एहन विशाल आयोजना चारुभर व्याप्त होइतो ... सभतरि कालक खड्ग स्पष्ट उठाओल देखाइतो जाधरि साँस ताधरि आसक कारणेँ छोट-छोट हल्लामे हमरासभकेँ आशाक किरण भलकैत रहल । अपन राजा दुर्योधनक दिससँ तऽ हमरासभकेँ कोनो आसे नहि छल किएक तऽ ओ हठी तथा अभिमानी रहथिन्ह । अपन हठक लेल सम्पूर्ण संसारकेँ अग्निमे सुड़ाह कऽ सकैत छलथि । मुदा पाण्डवसभक स्वभाव एवं व्यवहारसँ बीच-बीचमे आशाक अवश्य सञ्चार भऽ जाइत छल । सुनल्लिएकि जे जखन कृष्ण धर्मयुद्धक व्याख्या कयलखिन्ह तऽ कहाँदोन युधिष्ठिर बाजल रहथिन्ह – “ हे केशव ! युद्ध कखनो धर्ममय नहि भऽ सकैछ ! ” एकवेर तऽ उग्र स्वभावक होइतो भीम सेहो कृष्णसँ शान्तिक पक्षमे तर्कसहित अपन विचार रखलन्हि ।

अन्ततः किछु नहि भऽ सकल । हमरासभक आस पोआरक धधरा जकाँ धधकल आ' मिभा गेल । ओहि राति जखन हमर पति घर घुरलाह तऽ हुनकर मुँहे देखि हमरा भलकिल गेल जे आजुक राति प्रायः हमरासभक अन्तिम राति हएत । ... ओहि राति हमरा बकारे नहि फुटल । ओहो किछु नहि बजलाह । भरि राति छातीमे छाती सटोने नोर बहवैत रहलहुँ । ... भोरे जाइत काल ओ एतबय कहलथि – “ विदा ! प्यारी विदा ! ! ”

हम अपन मुरी उठाकय डबडबाएल आँखिसँ कहना देखिलिएकि ; किछु बाजलि नहि गेल । ... विदा ! विदा ! ! की विदा ? आईतक हम कहाँ विदाई करय सकलि छी ? कएटा युग, कतेक कल्प बिति गेल मुदा

ओहि भोरसँ बिछुड़ल अपन पतिकेँ हम एखनतक विदाई नहि कऽ सकलि छी ।

परात भनेसँ गाममे एकोटा पुरुष रहिये नहि गेलैक । हमर बाबू आ' भाय सेहो ओम्हर पाण्डवदिससँ सेनामे भर्ती भऽ गेल छलाह से सुनलहुँ । पति आ' देओर कौरव सेनामे तथा बाबू आ' भाय पाण्डव सेनामे । के ककर बध करत ? एहि स्वजातिय हत्याकाण्डसँ के ककरापर विजय प्राप्त करत ? ... ककरासँ के हारत ? हे परमात्मा !

दिन तऽ ओ प्रलयकेर प्रारम्भक छल, मुदा ओहू दिन भगवान भास्कर सामान्ये दिन जकाँ अपन ज्योतिर्मय वरदान पृथ्वीपर सर्वत्र छिड़िअबैत उदित भेल छलाह । सूर्योदयसँ पहिनहिँसँ तऽ ओतय घोर कोलाहल छलेहे मुदा सूर्यक प्रथम किरण कुरुक्षेत्रपर पड़िते ओ विशाल परती धप्प दऽ बरि गेलैक । रथसभक शिखरक छोड़सभ, योद्धासभक कवच, हाथ-हतियार, तरवारि, तरकश, बाण, बरछी, भाला, गड़ाँस, सेनापतिक मुकुट, घोड़ा आ' हाथीक साज-शृङ्गार सभ किछु एकेबेर जेना विस्फोटित भऽ गेल होइक । सूर्यक किरणसँ सभ किछु दमकि उठलैक । ओहि दिन ओहि ठाम मनुखक उमड़ल बाढिक कोना वर्णन करु ? जे देखलक सएह बुझलक । ओकर चित्रण केओ नहि पतियाएत, कल्पनासँ फाजिलक तथ्य अछि ई !

प्राणनाथसँ बिछुड़िते हमर जीवनक सम्पूर्ण रस सुखा गेल, सभकिछु निघटि गेल । दशो दिशामे अन्हारे अन्हार देखाय लागल ! कतहु किछु नहि बुझाय ... कखनो एम्हर आवी तऽ कखनो ओम्हर जाई । तहिया सान्त्वनो सेहो के ककरा आ' के दितौके ? सभक हाल एकहि रङ्ग ! सभ समान रुपें पीड़िता छलि, अपन-अपन परमप्रिय पुरुषसभकेँ रणमे विदा कऽ नोर चुआ रहलि छलि । सभक हृदयमे एकान्तक पीड़ा आ' क्रन्दनेटा रहैक । सासुलग जाई तऽ ओ हमरा टुकुर-टुकुर भकुआकय देखथि ; हुनकर आँखिक आगाँ दुहू पुत्रक चित्र नचैत रहैत छलन्हि होइत । गामक सखी मितिनसभ सेहो हमरेसन वेदनामे वेदाअलि छटपटाइति बौआइति रहैति छलि । सभ अपन-अपन प्राणोसँ प्रिय पतिकेँ मृत्युक द्वारिदिसि विदा भऽ जाइत देखने छलि । ... ओहिठाम के ककरा की कहिकय भरोस दितैक ?!

हम विक्षिप्त जकाँ भऽ कऽ गामक सभसँ उँच उतरबरिया उँचका धत्तापर जा कऽ वैसि गेलहुँ जतयसँ भोरक साफ इजोतमे कुरुक्षेत्र किछु-किछु देखाइत रहैक । हमरेसनक बहुतो आओरो ग्रामीण नारीसभ अपन-अपन सन्तानसभकेँ छातीमे सटोने थाकल शरीरकेँ ठाढ़ राखयमे

असमर्थ भए ठेहनियाँ रोपिकय बैसलि उचकि-उचकि कऽ देखक प्रयास कए रहलि छलि । सभक दृष्टिमे शून्यता छलैक आ' सभ कुरुक्षेत्रमे लहराइत मानवसमुद्रमे अपन-अपन प्रियसभकेँ ताकि रहलि छलि । ओहि समुद्रमे के कोनो मानव विन्दुविशेषकेँ ठेकानि कऽ चिन्हि सकैति छलि ? आब तऽ ओहिठाम खाली एकटा प्रचण्ड मानव पिण्ड मात्रहिं देखाइत छलैक जाहिमे व्यक्ति पूरापूरी लुप्त भऽ गेल छल । ओतय आब ने ककरो प्राणप्रिय पति, ने ककरो छातीक टुकड़ा पुत्र, ने ककरो भाय अथवा ने जीवनक एकमात्र आधार बाप, दादा वा आओर केओ देखाइत छलैक । राक्षसी मृत्यु सभकेँ मरयसँ पहिनहि एकाकार कऽ देने छलैक । हम नारीसभ ओहि उँचका धत्तापर ठाढ़ भऽ अपन हृदयमे क्षुद्र प्रेम समेटने अपन प्राणधारसभकेँ खोजक व्यर्थ प्रयत्न कऽ रहलि छलहुँ । दोसर-दोसर देशसभमे सेहो हमरेसभ सन अनेकन् नारीसभ रणक्षेत्रकेँ देखयसँ असमर्थ होइतो एहि दिशामे शून्य दृष्टियेँ ताकि रहलि छलि होइति – अपन-अपन लोककेँ खोजक प्रयास करैति !

पाण्डव पक्षीय सेनासभ पछवारी कात पंक्तिबद्ध ठाढ़ छल । बुझाइत छलैक जेना रातिये भरिमे विशाल मानव जङ्गल जनमिकय कतहुसँ आवि गेल होइक । पूबसँ उगैत सूर्यक किरण सोभे पाण्डव पक्षीय सेनापर पड़ैत छलैक । सात अक्षौहिणी सेना लऽ कऽ महारथी द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकि, चेकितान भीमसेनक पाछाँ युद्धकौशलक विभिन्न रूप तथा रणनीतिक आकार-प्रकारमे सङ्गठित भऽ कऽ ठाढ़ छल । बीच-बीचमे ओतय भीषण हलचल भऽ जाइत छलैक । सभ उत्तेजित भऽ जाइत छल । चहुँदिसि शङ्ख आ' दुन्दुभिक तुमुल ध्वनि पसरि जाइत छलैक । लागय लगैत छल जेना रथ, पैदल, आ' हाथीसँ भरल भयङ्कर सेना उताहुल तरङ्गसँ व्याप्त महासागरक समान क्षुब्ध भऽ गेल होय ।

रणहेतु व्याकुल पाण्डव आ' पाण्डवक विराट सेना तीब्रतासँ एम्हर-ओम्हर कऽ रहल छल । केओ रथपर, केओ हाथीपर तऽ केओ घोड़ापर आरुढ़ भऽ रहल छल । कतेककेँ हमरासभ कवच बन्हैत देखलिऐकि । सेनाक आगाँ-आगाँ नेतृत्व कऽ रहल छलाह भीमसेन, कवचधारी माद्रीकुमार नकुल तथा सहदेव सुभद्राकुमार, धृष्टद्युम्न तथा पाञ्चाल देशीय क्षत्रीयसभ । सभसँ आगाँ भीमे छलिथि ।

युद्धस्थलक हेतु बीचमे खाली मैदान छल । दुर्योधन ओहि मैदानक बीचमे अपन पक्षदिस एम्हर-ओम्हर दौगैत अत्यन्त चपलतासँ

निरीक्षण करैत सभदिसि पहुँचक कोशिश कऽ रहल छलाह । कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, सिन्धुराज, जयद्रथ, कम्बोजराज, सुदर्शन, कृतवर्मा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनि आदि अपन-अपन अक्षौहिणीक संगहि नेतृत्वक मुद्रामे तैयार रहथि । एकगोट बड़का रथपर पाकल केश आ' दाढीक कारणेँ उज्जर देखाइत बूढ़ भीष्म सेहो रहथि जनिका हमरालोकनि अपन ' पितामह ' कहिअन्हि । हाय भीष्म ! ई की कऽ रहल छी ? मरय बेरमे दुर्योधनक अढ़ौतीपर ई कोन कृत्यकलेल अहाँ बुढ़ारीमे रणभूमिमे आयल छी ? हाय, पितामह, हे आदरणीय बूढ़ गुरुजन ! हाय !!

हाय, पाञ्चाल कुमारी द्रौपदी ! ओ अपन पञ्च पतिकेँ रणभूमिमे किछु दूरधरि अड़िआति दासदासीसभसँ घेरलि उपप्लव्य नगरदिसि जा रहलि छलीह । हाय, नारी हाय ! अहाँक प्रतिशोध आ' प्रतिहिंसाक भावनाक अन्धवेग अहाँक अपन स्वाभाविक नारीत्वक हृदयकेँ नहि जानि कतय भाँपि तोपि देने अछि !!

हम सभ नारीसभ अपन स्थितिकेँ सहेजति एकबेर एकदोसरकेँ एहि क्षणमे देखलहुँ । बाजयलेल तऽ किछु छल नहि, मात्र हृदयक कोन्हेमे कोंचल त्रासपूर्ण उद्विग्नता सभक शून्य आँखिपर छाड़ल छलैक – गुफाक अन्धारमे नुकायल भयत्रस्त असहाय पशुक चमकैत दीन आँखि जकाँ ।

तखनहिँ अचानक भयङ्कर घोषसहित एकहिवेर असंख्य शङ्खसभ निनाद कऽ उठल । धृतहुँ, भेरीसभ, गजराजक चिगघार जकाँ घोष करैत बाजय लागल । नगाड़ा गड़कय लगलैक आ' ... पृथ्वी लाखौँ जनकण्ठसँ निकसल जय ध्वनिक स्वरसँ आव फाटत तव फाटत करय लागल । चारुभर अत्यन्त डराओन आवाजक सम्राज्य भऽ गेलैक । लगैक जेना सहस्र बज्र एकहिँ बेर खसि पड़ल होय आ' पृथ्वीपर भयंकर विस्फोट भऽ गेल होइक । मायक कोरमे सटल नेनाभूटकासभक दम डरसँ फूलय लगलैक आ' ओसभ “ माय ! माय !! ” करैत चिचिया उठल । हमर सखी-मितिनसभ विक्षिप्त भऽ अपन केशकेँ छिड़िया-छिड़ियाकय नोचैति एम्हर-ओम्हर दौगय लागलि । ... केश तऽ केओ आई बन्हनहिँ नहि छलि । ककरो माथमे खोपा नहि छलैक । अपनाकेँ केओ सजोने नहि छलि !

हमर मति हेरा गेल । चेतना शून्य भऽ गेलहुँ । ठेहन रोपि माथपर हाथ दऽ कऽ नर्कक टलपलाइत दृश्य जकाँ ओहि अस्पष्ट कुरुक्षेत्रकेँ एकटक निहारि रहलि छलहुँ । ओहीमे कतहुँ एकगोट अश्वारोही सेहो हएत जे हमर करेजकेर मूल अछि । हे परमात्मा, ओकर रक्षा करु, रक्षा करु !

तत्क्षण पछवारीकात पंक्तिबद्ध पाण्डव सेनासँ एकगोट ज्वालामालासँ युक्त रथ सूर्यक किरणमे अग्नि समान चमकैत पहिने नहुँअसँ आगाँ बहरायल आ' तीव्र गतिमे पूर्वदिसि बढि गेल । ओहिमे सयकडौं घण्टीसभ लागल छलैक जे टुन-टुन करैत बाजि रहल छलैक । ओहिमे जोतल श्वेत घोड़ासभ ओकरहिं तालमे थिरकैत आगाँ बढिरहल छल । रथक पार्श्वमे नमहर दण्डीमे कपिक आकारक अङ्कित ध्वजा ओहि भिनसुरका पुरवरियामे फरफरा रहल छलैक । रथक लगाम पकड़ने सारथी अपन आसनपर बैसल जाहि निश्चिन्ततासँ मस्त भऽ रथकेँ हाँकि रहल छल ताहिसँ तऽ लगैत छलैक जेना ओ रथ रणक हेतु नहि आमोद-प्रमोद आ' विहारक वास्ते जोतल गेल होय । हमर एकगोट मितिन ओम्हर आँगुर देखवैति बाजलि – “ देखही तऽ, सारथीक आसनपर बैसल कन्हैया अछि । ... ओ कन्हैये तऽ अछि ! ”

साँचे ओकर श्याम वर्ण हँसमुख अनुहार, बीच-बीचमे चमकैत दाँत सूर्यक प्रकाशसँ बेरबेर उद्भासित होइत छलैक । माथपर मयूरक रङ्गविरङ्गी पाँखिक मुकुट, उघार शरीर, डाँडसँ नीचा पीताम्बर वस्त्र धारण कएने ओ सुन्दर पुरुष निःसन्देह कृष्ण रहथि । हाथमे गाण्डीव पकड़ने आ' बाण धएने रथमे आरूढ़ रहथिन्ह रथपति अर्जुन ! अर्जुनकेर उज्ज्वल कान्तिमय मुँह सूर्यक प्रकाशमे चमकि रहल छलन्हि ।

पलभरिमे रथ समरक पङ्कणक मध्यमे पहुँचि गेल, कृष्ण जोड़सँ रासि खिचलन्हि । घोड़ासभ सोभहिं ठमकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैक ।

अकस्मात् सभ किछु बन्न भऽ गेल । क्षणभरिमे सम्पूर्ण कोलाहल रुकि गेल । शङ्ख फूकव बन्न भऽ गेल, भेरी तथा धूतहूक आवाज थमि गेलैक । कुदैत-फानैत असंख्य सैनिकसभ मूर्तिवत अपन-अपन स्थानपर निःशब्द ठाढ़ भऽ गेल । पुरवरिया बसातो ठमैक गेलैक, सम्पूर्ण चराचर निस्तब्ध भऽ गेल । शान्ति एहन जे शमीक गाछसँ भूमिपर खसैत पातक आवाज सेहो स्पष्ट सुनाय लागल ।

कनेक कालक बाद अर्जुनक कण्ठसँ वाष्पित आर्त वाणी निकसल – “ हे मधुसुदन ! हमरासमक्ष युद्धहेतु उपस्थित स्वजनक एहि समुदायकेँ मारि विजय प्राप्त करक हमरा कोनो आकांक्षा नहि अछि । ... हमरा ने तऽ राज्य चाही आ' ने एहिसँ प्राप्त कोनो सुख ! ”

ओ कहलखिन्ह – “ हे जनार्दन, ईसभ जौ हमरा मारहु चाहैत छथि तऽ मारि देथु ; हमर गाण्डीव मुदा हिनकासभपर नहि उठत । तीनहुँ लोकक राज भेटयबला हएत तैयो हम हिनकासभकेँ मारि ओकरा प्राप्त

नहि करय चाहव । ... तखन ई हस्तिनापुर की अछि, जे हम एहन नरहत्यामे लागू ? ”

युद्ध नहि करक निर्णय करैत अर्जुन अपन गाण्डीवकेँ नीचा फेकि देलखिन्ह । भोरक ओहि निस्तब्धतामे अर्जुनक मानवहृदय आओर वाणी सभतरि गुँजि उठल । हम गद्गद् भऽ गेलहुँ । हृदय द्रवित भऽ गेल ; आँखिसँ सन्तोषक नोर खसय लागल ।

मुदा तखनहि कृष्णक ईश्वरीय वाणी दूरसँ समुद्रक गर्जन जकाँ सम्पूर्ण शान्तिकेँ भङ्ग करैत सुनाय लागल । ओ कहैत रहथिन्ह – “ हे पार्थ, तोरा मोह आक्रान्त कऽ नेने छह । अपन गाण्डीव उठावह आ’ युद्धमे रत भऽ जाह ! विजयी हएवह तऽ पृथ्वीक भोग करवह कथं कदाचित् मारल जयवह तऽ स्वर्गक भोग प्राप्त हएतह । ”

मुदा अर्जुनक मानवहृदय नहि मानलकन्हि । माथ झटक कऽ ओ कृष्णक उपदेशकेँ अमान्य कऽ देलन्हि । ... की साँचे आई कुरुक्षेत्रमे मानवता दैवत्वपर विजय प्राप्त कऽ लेत ? की आई ठीके अर्जुन ईश्वरकेँ त्यागि मानवताक वरण करयलेल कटिबद्ध भऽ जयताह ?

कृष्ण अनेकन् तर्क रखलन्हि । दर्शनक पूर्ण व्याख्या कयलन्हि । हम सूर्यकृण्ड गामक ओहि उँचका धत्तापर ठाढ़ भऽ गीताक एक-एक वचन स्वयं श्रीकृष्णक मुहँसँ सुनि रहल छलहुँ । प्रभातकेर शान्त वातावरणमे श्रीकृष्णक ओजपूर्ण सुरल वाणी बिना कोनो उद्विग्नताकेँ हमरा कानमे पड़ि रहल छल । अर्जुन मानव हृदयकेर व्यथासँ व्यथित रहथि ; ओ बेर-बेर करुणाद्र भऽ शिथिल भऽ जाथि । मनुखक सभ नरन गुण – करुणा, सहृदयता, स्नेह, प्रेम, स्वजातीयता, कौटुम्बिकता, मैत्री, दया, सभकेर ओहि दिन अर्जुन साकार रूप रहथि ! ओम्हर कृष्ण अनुद्विग्न, शान्त, निश्चल, आत्मनिर्भर एवम् दृढ़ भऽ निरन्तर श्लोकपर श्लोक कहैत उपदेश दैते रहि गेलखिन्ह । ओ अर्जुनकेँ बुझवैत कहलखिन्ह – “ हे कौन्तेय, अहाँकेँ निस्पृह आ’ अनासक्त भऽ अपन कर्तव्य करक चाही । निष्काम कर्म कयलासँ पाप नहि होइत छैक । अपन दुश्मनसभकेँ स्थितप्रज्ञ भऽ नाश करु ! ”

हे कृष्ण ई केहन निर्मम उपदेश अछि, अहाँकेर ? मनुख अपन छोटछीन आशा आकांक्षासँ चालित प्राणी अछि । एकर क्षणिक जीवनमे प्रणयकेर वास छैक – प्रियक संग एकहि क्षण किएक ने होइ सटक लोभ, पुत्रकेँ चुमक लालसा, मित्रताक आदान-प्रदानमे बन्धल साख्य जीवनमे गरमायक आकांक्षा । ... अहाँ ने स्वर्गक देवता कृष्ण छी ! स्वर्गक लोक

अपन अमरत्वक कारणेँ निस्पृह भऽ सकैत अछि, ओकर हृदय करुणाहीन भऽ सकैत छैक आ' ओसभ अपन आँखिक नोर रोकि सकैत छथि ; जतए मृत्यु नहि छैक अनन्त जीवन छैक ततए केओ निष्काम भऽ सकैत छथि । ... मुदा हमसभ मनुख छी । हाय ! कालक ग्रासी हमरासभमे ई कहाँसँ सम्भव हएत ? हे कृष्ण ई केहन कर्तव्यक प्रेरणा अछि अहाँक, अपने सखाकेँ अहाँ युद्धहेतु बेर-बेर उकसा रहल छी ! की मानवजीवन मृत्युकेर दुर्दमनीय साँध-सिमानसँ ओहिना घेरायल सडकूचित नहि अछि ? आई अहाँ मृत्युकेँ अस्वाभाविक रुपें आह्वान करैत ओकरा फेर कर्तव्यक संज्ञा किएक दऽ रहल छी ? हे अर्जुन, अहाँकेँ सम्पूर्ण मनुख-नारीकेर हृदयसँ आशीष । अहाँ निर्भयतापूर्वक देवत्वसमक्ष मानवीय सत्य स्थापित कऽ रहल छी । मनुखक अहिना प्रतिनीधित्व करैत रहू । अर्जुन अहाँ अडल रहू !

कृष्ण आगाँ बढलथि – “ हे प्रतापी अर्जुन, अहाँ एखन अज्ञानतासँ घेरायल छी । ज्ञानक चक्षु उघारिकय देखू ! एतए कहाँ केओ ककरो मारि रहल छैक ? अहाँक शरीर एकगोट फाटल-पुरान लत्ता अछि । जकरा अहाँ मरब कहैत छी ओ तऽ वास्तवमे एकरा फेरब मात्रहिँ अछि । ने अहाँ मरब, ने ककरो मारबैक आ' ने एतए केओ मरत । महाबाहो, जे अहाँ एतए देखि रहल छी ओ सभ मिथ्या थिकैक । ”

की वास्तवमे ई सभ किछु मिथ्या थिक, भ्रम थिक ? एहि विशाल जनसमुद्रमे हेरायल अपन प्रिय पतिकेँ खोजैत हमर ई आँखि जे देखि रहल अछि से सभ दृश्य माया आ' मिथ्या थिकैक ? हृदयमे बसल अपन गर्भक सन्तानक लाल-लाल रसायल सुन्नर ठोरक वीचमे राखयलेल उन्मुख अपन उर्ध्व स्तन-युगल की वास्तवमे मयेटाक लघु मांस-शिखर अछि ? समुद्रक गर्भमे स्वातीक वृष्टि-विन्दुक लालसाक कारणेँ खुलैत बन्द होइत सिपी सम्पुट जकाँ सन्तानक तीव्र कामनामे स्पन्दित हमर मातृगर्भ सेहो मिथ्ये अछि ? हे केशव, स्वर्गक उच्चतामे वैसल हएबाक कारणेँ अहाँकेँ नीचाक कीटमय मृत्युलोकमे हमरासभकेँ देखि लगैत हएत जे मानवजीवन मिथ्यावत एवम् अप्रासङ्गिक छैक । हमहुँसभ चुट्टीकेँ जखन देखैत छिएक तऽ अहिना लगैत अछि । मुदा हमरासभक जीवन हमरासभलेल कथमपि अप्रासङ्गिक नहि अछि । केहनो तर्क अथवा उच्च दर्शनक कोनो जोर जीवनक एहि सुख-दुखकेँ, मरणकेर सत्यताकेँ, एहि ठोस घेराकेँ मिथ्यामे परिणत नहि कऽ सकैत अछि, हे मुरारे !

अर्जुनकेँ मानव अवस्थासँ विचलित नहि होइत देखि कृष्ण आगाँ कहिते गेलखिन्ह । निस्पन्द आकाशमे हुनकर गम्भीर वाणी तरङ्गित होइत

रहल । उँच पहाडुक शिखरोसँ उपरसँ भहरैत अवैत ध्वनि जकाँ हुनकर शब्दसभ हमरो कानमे पडैत रहल । कृष्ण कहैत गोलाह – “ हम परमब्रह्म परमेश्वर छी ! हमरापर पूरा विश्वास आ' आस्था राखू । हम जे कहैत छी सएह करू । हम आदर्श छी अहाँक, अहाँक प्रार्थनाक हेतु छी, हमहीं अहाँक लक्ष्य छी !! ”

अर्जुनक मानवीय त्रुटिसभपर बेर-बेर प्रहार करैत अहिना कृष्ण हुनका शिथिल बनवैत गोलाह । भरि उखरा कृष्णक निरद्विग्न कण्ठ ध्वनि निरन्तर चारुभर गुञ्जैत रहल । ओहि दिन कुरुक्षेत्रमे प्रलय शुरु होमयसँ नरसंहार मचयसँ ठीक पहिनेधरि कृष्णक अठारह अध्यायी गीताक सम्पूर्ण पारायण भेल ।

बेचारा एकगोट क्षुद्र मानव देवताक रुद्र तेजक आगाँ कतेक कालधरि अडुय सकैत ? कखनतक टिकय सकैत ? ... अर्जुनक मानव आग्रह ढिलिआइत गेलैक । धीरे-धीरे अर्जुनसँ मानवता निकैल गेलैक आ' खाली स्थानमे ओकर बदलामे नहुएँ-नहुएँ देवत्व सन्धिआइत चलि गेलैक । अन्तमे कृष्ण अर्जुनकेँ मुँह बावि अपन ईश्वरीय प्रमाण प्रदर्शित कयलन्हि । अपन विराट रूप देखाकय !

तकराबाद ओ अर्जुन अर्जुन नहि रहि गोलाह । ओ तात्काल ईश्वरारूढ़ यन्त्र बनि गोलाह । हुनकापर देवता सवार भऽ गेलन्हि । हुनकर दुहू बलिष्ठ भुजा काँपय लागल । फेकल गाण्डीव चट उठा लेलन्हि आ' तात्काल प्रत्यञ्चा सेहो चढ़ा लेलन्हि । ...गीताक अठारह अध्याय श्रवण कयलाक पश्चात् मनुख मनुख नहि रहि जाइत अछि । मनुख ईश्वरारूढ़ भऽ जाइत अछि आ' तँ अतुल शक्तिसँ विद्युन्मय सेहो ।

अकस्मात् रणक्षेत्रक निस्तब्धता फेरसँ भङ्ग भऽ गेल । शङ्ख, दुन्दुभि आ' भेरी-नगाड़ाक निनाद तथा सैनिकसभक हुङ्कारसँ कुरुक्षेत्र कम्पित भऽ गेल । फेरो चारुभरसँ प्रबल बेगसँ वायु बहय लागल । विहारि आवि गेलैक । आकाशमे घनगर्जन होमय लगलैक । दैवी शक्तिसँ सम्पन्न अर्जुन उन्मत्त भऽ कऽ अपन गाण्डीवसँ टङ्गार करैत युद्धमे जुटि गोलाह । दूटा पंक्तिबद्ध पर्वत श्रृङ्खला ससरिकय जेना आकाशमे टकरा गेल होय तहिना भीषण गर्जन करैत दुहू सेना समरमे भिड़ि गेलैक । मात्र अर्जुनेटामे देवता नहि चढ़ल रहेक । गीताक उपदेश कोनो कृष्ण अर्जुनेटाकेँ सुनोने रहथिन्ह ? हुनके मुँहसँ कुरुक्षेत्रक सम्पूर्ण सैनिक सेहो गीताक उपदेश सुनि पूर्णरूपेण उन्मादित भऽ गेल छल । ... मानव अहिना ईश्वरीय शक्ति लग

धर खसा पराजित भऽ जाइत अछि । उन्मादित भऽ कऽ आ' एकगोट लक्ष्यप्रति धावित भऽ कऽ !

युद्धक भीडन्त शुरु भऽ गेल । एक नहि दू नहि ... अठारह दिन तक अनवरत मृत्युक यन्त्र हड़हड़ाइत चलैत रहल । कच ..कच ..कच ..कच मनुखक असंख्य मनुखक, कच ..कच ..कच ..कच कोमल गर्दन-माथ कटाइत रहलैक, कटाइत रहलैक । तुमुल युद्धघोष होइत छल आ' सहस्त्रौं सहस्त्र योद्धासभक कचरमवध भऽ जाइत छलैक । ईश्वरारुढ़ भेल सहस्त्रौं कण्ठक रणहुंकारसँ ज्वालामुखीक विस्फोट जकाँ होइत भान होइत छलैक । मुदा प्रत्येक मनुख अपन-अपन बेटा बन्धु-बान्धवक बधपर गहीर निश्वास अवस्से छोड़ैत छल अपन एकान्तक निजी उछवास ; कच दऽ माथ कटिकय पृथ्वीपर खसितो प्रत्येक कबन्ध एकबेर अपन-अपन पएरपर कहना कऽ ठाढ़ भऽ नाचिकय चारुदिस देखि लैत छल आ' फेर पछड़ि कऽ खसि पड़ैत छल । ... नहि जानि स्वर्गक कोन कोन्हमे भुखायल देवता बैसल छलथि जनिकर क्षुधा एतबोपर नहि मेटा रहल छलन्हि, की जानू जे कोन आ' केहन पिआस रहन्हि जे कहना कऽ तूत नहि भऽ रहल छलन्हि ! ... नरमुण्डपर नरमुण्ड चढ़ैत गेलन्हि हुनकासभपर, देवतासभक समुख मनुखक मरक हिमालय पहाड़ ठाढ़ भऽ गेलन्हि, सोनितकेर रक्तिम गङ्गा बहय लागल मुदा तैयो हुनकरसभक भूख आ' ओ पिआस नहि मेटायल । अठारह दिनतक ई महाभारत मचैत रहल । अन्ततः मृत्युक यन्त्र थम्हल, छेदित होमयलेल तखनतक कोनो ग्रीवा बाँकीये कहाँ रहि गेल छलैक ? ओहि युद्धमे मात्र सात गोटे बाँकी रहलाह । लाखों पुरुष मारल गेल । पृथ्वीपरसँ पुरुष शून्य भऽ गेल । बस खाली विधवा नारीसभ अहि लोकमे बाँचयलेल रहि गेलि ... सनकलि ... अपन छातीसँ असहाय अपन-अपन बाल सन्तानसभकेँ सटोने ।

कुरुक्षेत्र लाखौं मृत शरीरसँ भरल छल, चारुभर मुर्देमुर्दा छलैक । आव कुरुक्षेत्र श्वान, शृङ्गाल, गिद्ध तथा विभिन्न मांसभक्षी पशुपक्षीसभक अमङ्गलकारी किडा आ' छिनाभ्रपटीक केन्द्र भऽ गेल छल । दुर्गन्धसँ भरि गेल छलैक ।

हम विधवा भऽ गेलहुँ । हमरासन लाखौं नारी वैधव्यक शिकार भेलि । विधवा मरलि नारी अछि जकर देह कालान्तरमे गलिकय समाप्त भऽ जाइत छैक । कुरुक्षेत्रक ओहि मुर्दाक पहाड़पर कतहु हमरो पतिक शव छल हएत नदिया-कुकुरसभ घिचैत, नोचैत, आ' घिसिअबैत छल हएतैक । नहि जानि कतय घिसिआकय पहुँचा देने हएतैक । मुर्दासभकेँ चील,

गीढ़सभ आकाशमे उठा-उठा कऽ कतय-कतय उत्तरभारतदिसि विभिन्न स्थानसभपर उड़ाकय लऽ जा कऽ छिड़िया रहल छलैक । ... ओसभ हमरासभक प्रेमीसभक – हमरासभक प्रिय पतिसभक लाश छल, हमरासभ विधवासभक ... ।

हमर एकगोट मृत्यु तऽ ओही दिन कुरुक्षेत्रमे भऽ गेल जहिया हमर पति मारल गेलाह । दोसर मृत्युक हेतु सेहो हमरा बेशी दिन प्रतीक्षा नहि करय पड़ल । हमरा मोन नहि पड़ैय हम कहिया मरलहुँ, कोन दिन हमर मानवदेह विसर्जित भेल । मुदा हमरासन अनन्त लाखौं लाख असंख्य नारीसभक प्रेतात्मा अखनो अपन वैधव्य लऽ कऽ चौदहो भुवनमे बौआ रहल अछि । अपन-अपन प्रेमीकेँ खोजि रहल अछि !

तहियासँ ... युगमयुगसँ अपन प्राणनाथक शरीर जतए खसल रहैक ततहि बैसल छी । अनन्त कालधरि हम एतहि बैसल रहब, अही पोखरि कालमे पड़ल रहब । अही स्थानकेँ हमर प्रिय हमर प्रेमी अपन शरीरसँ अन्तिम बेर सपर्श कयलन्हि । तँ हमरालेल ई थान प्रिय अछि । हमरासभ लाखौं नारी, महाभारतक युद्धमे विधवा भेलसभ, युग-युगसँ ओहि स्थानसभपर प्रतीक्षा कऽ रहल छी । अपन मरल प्रेमीसभक बाट देख रहल छी । ओकरेसभक हेतु ... ।

“ बौआ, हेऔ बौआ ! ... सुति रहलहुँ ... खिस्सा खतम भऽ गेल । ... बौआ ! बौआ !! नीक जकाँ सुतु ... ! ”

नहि जानि कखन हम निन्न पड़ि गेलहुँ । पता नहि कखनसँ मोदिआइनक एकसुरक कण्ठध्वनि हमरा कानमे पड़नाई बन्न भऽ गेल । आ' फेर हम मस्त स्वप्नहीन निद्रामे समाहित भऽ गेलहुँ ।

एकहिं बेर एकदम भोरे, कनेक अन्हारेमे मिसरजी हमरा भिकभोरि कऽ उठलन्हि – “ उठू, उठू ! भोरे चारि बजेक गाड़ी पकड़य पड़त । ... अखने घर घुरय पड़त । बौआ, उठू ... ! ”

आँख मिड़ैत उठलहुँ । निन्न नहि पुड़ल छल । ठेही सेहो एखनधरि नहि उतरल रहय तथापि मिसरजीक हाथ पकड़िकय हम स्टेशनदिसि विदा भेलहुँ । अखनो राति बहुत बाँकीये रहैक । अबैत काल भीतर कोठरीमे सुतलि मोदिआइनकेँ सुनाकय मिसरजी कहने रहथिन्ह – “ मोदिआइन, हमसभ जाइत छी । ”

भीतरेसँ मोदिआइन बाजलि रहय – “ ठीक छैक । ... बौआ, बढ़ियाँसँ जायब । ... मिसरजी बहरका जाफरी लगा देबैक ! ”

मोदीकेँ एकबेर फेर खोंखी शुरु भऽ गेलैक ।



मोदिआइनक दोकानसँ निकलिते देखलहुँ जे हड़ाहा पोखरिमे एकगोटे नहाकय गीता पाठ करैत जाऽ रहल अछि ।

**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः
नचैवं क्लेदयन्त्यपो न शोषयति मारुतः ।**

स्टेशनपर हम औघायले पहुँचलहुँ । कहना कऽ गाड़ीमे चढ़लहुँ से हमरा मोन अछि । मुदा डिब्बामे बैसिते औघाकय हम फेर निन्न पड़ि गेल छलहुँ । आ' नहि जानि की-की सपनाय लागल छलहुँ ... अर्थ ने बर्थकेर ... कथी-कथी, की-कहाँदोन ! कखनो एकदम चमकैत सूर्य देखाइत छल तऽ कखनो मोदिआइन आगाँ चलि अबैति छलि । कखनो काल बड़का-बड़का डराओन गिद्धसभ आकाशमे मड़ड़ाइत देखैत छलहुँ । ... कखनो जेना माछ बेचैत मलाहिन आवि जाय तऽ कखनो लड़ाई ... कच..कच..कच । एहि सभक बीचमे हमरा दूर आकाशसँ एकहिटा स्वर सुनाई पड़य – “ बौआ, बड़का बनब, कहियो वीर बनक प्रयत्न नहि करब । नीकलोक बनब, नीक ... बढ़ियाँ ! ”

जखन रेल जयनगर पहुँचलैक तऽ बढ़ियाँ रौद उगि गेल छलैक । रेलसँ उतरिते अङ्ग-अङ्ग दुखाय लागल । दड़िभङ्गा यात्राक ठेही चढले छल । निन्न सेहो नहि पुरल छल तँ मोन भारी आ' अस्थिर छल ।

आइन पहुँचलहुँ तऽ सभ हमरा घेरि लेलथि आ' पुछलथि – “ की सभ देखलह, दड़िभङ्गामे ? ”

हम कहलएक – “ मोदिआइन ! ”

सभ केओ ठठाकय हँसि देलथि । शायद हुनकासभकेँ हम कोनो ठट्टाक वस्तु सुना देने रहियन्हि ।

**सुन्दरीजल बन्दीगृह
२८, २९, ३० जनवरी १९६४
माघ १५, १६, १७ २०२०**



विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक जन्म ८ सितम्बर, १९१४ अर्थात वि.सं. १९७२, भाद्र २४ गते । छठिहारक नाम चूडामणि होइतो काशीमे जनमल छलाह तै काशीक आदिदेवक प्रसादक रुपमे हिनक पारिवारिक नाम विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला राखल गेलन्हि । चारिये बर्षक उमेरमे अपन पिताजीक संगे शरणार्थीक रुपमे विदेशमे निर्वासित रहयहेतु बाध्य होमय पड़लन्हि ।

लेखन नवम् कक्षाक छात्रजीवनेसँ शुरु कयलन्हि । तहियाक लेखादि मुख्य रुपसँ हिन्दीमे होइत छलन्हि । प्रसिद्ध समालोचक शान्तिप्रिय द्विवेदी तथा हिन्दीक मूर्धन्य उपन्यासकार प्रेमचन्दक मार्गदर्शनमे लेखन प्रारम्भ कयने छलाह । ओहि समयकेर लघुकथासभ प्रेमचन्दद्वारा सम्पादित मासिक हंसमे प्रकाशित भेल छन्हि । नेपालीमे हिनकर पहिल कथा चन्द्रवदन कवि सिद्धिचरण श्रेष्ठक सम्पादनमे काठमाण्डूसँ प्रकाशित मासिक पत्रिका शारदामे निकसल छल ।

मनोविश्लेषणात्मक पृष्ठभूमिमे लिखल कथासभ कथा कुसुम आ' २००६ सालमे दोषी चश्मा संग्रहक प्रकाशन नेपाली कथा साहित्यमे हिनका युगप्रवर्तकक रुपमे प्रस्तुत कयलकन्हि । मुख्यतः चेखव, मोपासाँ, टाल्स्टाय, गोर्की, वर्नार्ड शा हिनकर पसिन्न रहथिन्ह- आ' नेपालीमे देवकोटा आ' सम ।

२०१७ साल पुष १ गतेक बाद आठ वर्षक जेलजीवनमे पाँचटा उपन्यास, एकगोट कथासंग्रह, एकटा कवितासंग्रह, किछुनाटक आ' जीवनीक ३५० पृष्ठ लिखलन्हि । पाँचगोट उपन्यास, किछु कविता, आ' दूगोट कथासंग्रह प्रकाशित भेल अछि । मोदिआइन हुनकर एकगोट अपने किस्मक लघु उपन्यास छन्हि ।

कोइरालाजी कहथिन्ह- “ वास्तवमे हम अपनाकेँ साहित्यिक नहि बुझैत छी । हमर क्षेत्र तऽ राजनीतिक थिक । राजनीतिमे हम एकगोट अन्तर्प्रेरणासँ लगलहुँ आ' साहित्यमे एकर ठीक विपरित । कलाकेँ सुरक्षा नहि चाही, एकरा स्वतन्त्रता चाही । एकरा चलल बाटपर फेरसँ पयर राखक मोन नहि होइत छैक । अपन रस्ता अपने बनाबय चाहैत अछि । ई भौतिक तृप्ति नहि दैवी असन्तोष अपनऽबैत अछि । फायडक सिद्धान्तकेँ हम मानैत छी मुदा अखन अहूसँ बढिकय हम आई नैतिकता (morality) केँ मानैत छी ।”



रूपान्तरकार बृपेश चन्द्र लालक जन्म १९५५ ई. २९ मार्च । हिनक छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि, आ' छथियो विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीतिक अनुयायी आ' नेपालक प्रजातान्त्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा । नेपाली राजनीतिपर बरोबर लिखैत रहैत छथि । प्रस्तुत रूपान्तरणक अलावा मैथिलीमे हिनक 'आन्दोलन' कविता संग्रह प्रकाशित अछि ।